पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-५, नवम्बर, सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १९४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

आर्य समाज ने देश में क्रान्तिकारियों की मजबूत फौज खड़ी की!

वेदों की पुनर्प्रतिष्ठा, आधुनिक शिक्षा और शुद्धि–विधान से किया देश का कायाकल्प

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का प्रेरणादायक उद्‌बोधन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन समारोह में उपस्थित हिमांचल प्रदेश के हमारे लोकप्रिय महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, केन्दीय मंत्री डॉ. सत्यपाल सिंह जी, पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती जी महाराज, इस सम्पूर्ण आयोजन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्रीमान सुरेश चन्द्र आर्य जी, जेबीएन बोर्ड के चेयर मैन श्री एस के आर्य जी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्रीमान् प्रकाश आर्य जी, एमिटी ग्रुप के चेयर मैन श्री अशोक कुमार चौहान जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान मास्टर रामपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, अमेरिका आर्य समाज के प्रधान श्री विश्रुत आर्य जी, पूर्वी उ.प्र. से यहाँ पर पधारे श्री ओम प्रकाश आर्य जी, अनेक देशों से यहाँ इस सम्मेलन में पधारे सभी आर्यगण और उपस्थित भाइयों और बहनों।

मैं सर्व प्रथम आप सबका इस पूरे आयोजन को इतनी भव्यता के साथ यहां पर आयोजित करने के लिए हृदय से अभिनन्दन करता हूँ। भारत की सनातन धर्म की परम्परा में एक कुम्भ की परम्परा है और उस आध्यात्मिक सांस्कृतिक भव्य आयोजन को जिसमें सम्पूर्ण मानवता एकजुट हो करके मानवता के कल्याण के लिए एक नये संकल्प के साथ आगे बढ़ती है, कुम्भ है और अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आपमें एक आर्य महाकुम्भ है और इस महाकुम्भ आयोजकों में खासतौर पर ९५ वर्ष की अवस्था में भी इस आयोजन में यहाँ पर उपस्थित हैं महाशय धर्मपाल जी का और उनकी पूरी टीम का, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारियों का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

आर्य समाज के साथ मेरा सम्बन्ध बहुत नजदीक से रहा है। और इसलिए जब कहीं भी आर्य समाज के द्वारा कोई आयोजन होता है तो मुझे उस आयोजन में एक भावनात्मक रूप से जुड़ने में बहुत मजा आता है। देश के सैकड़ों वर्षों के गुलामी के उस कालखण्ड में आशा की एक नई किरण बन करके १८७५ में उगा था आर्य समाज। और सचमुच आर्य समाज जैसा आन्दोलन खड़ा करने के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष को और पूरी दुनिया में जहाँ कहीं भी सनातन हिन्दू धर्मों की सत्ता है उसको महर्षि दयानन्द के प्रति बार बार आभार व्यक्त करना चाहिए। ये सम्मेलन अपने आप में एक बहुत बड़ा संदेश दे रहा है। आज के इस काल खण्ड में जब व्यक्ति के पास समय न हो, स्वयं के कार्यों में उसकी व्यस्तता इतनी ज्यादा हो, कि उसको परिवार के लिए समय नहीं, समाज के लिए समय नहीं, राष्ट्र के लिए समय नहीं उसमें भी हजारों हजार की संख्या में देश और दुनिया के ये आर्य बन्धुगण यहाँ पर एकत्र होकर के राष्ट्र और समाज के बारे में चिन्तन कर रहे हैं, यह सचमुच अभिनन्दनीय है और वह भी एक दो दिन नहीं लगातार चार और पांच दिनों तक इतना बृहद सम्मेलन चले, सचमुच महर्षि दयानन्द सरस्वती की और उन आर्य ऋषियों का जिसमें श्रद्धानन्द जी जैसे ऋषियों ने अपनी आहुति दी थी, उन सबको बहुत आनन्द की अनुभूति हो रही होगी कि जो हमने जो बीजारोपण किया था भारत के अन्दर वैदिक धर्म की इस ज्वाला को आगे बढ़ाने के लिए आज वो इस रूप में भव्यता के साथ आगे बढ़ता दिखाई दे रहा है। महापुरुष की सही पहचान यही है- जीते जी तो हर व्यक्ति उसके आसपास हर प्रकार के लोग याद करते हैं स्मरण करते हैं सम्मान करते हैं। लेकिन महापुरुष वही जिसके जाने के सौ वर्ष के बाद भी उसके अनुयायी उसका स्मरण करते हैं।

और आर्य समाज का ये जो भव्य स्वरूप देखने को मिल रहा है मुझे काठमाण्डू जाने का भी अवसर प्राप्त हुआ था। इससे पूर्व दिल्ली में ही आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में भी आने का अवसर प्राप्त हुआ था। मैं कह सकता हूँ कि यदि आर्य समाज जैसा संगठन सक्रिय हो जाय सचेत हो जाय तो भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक जितनी भी समस्यायें हैं इनका समाधान स्वतः होता हुआ दिखाई देगा। ये समस्यायें समस्यायें नहीं रह पायेंगी। और आज तो आपके पास अनुकूल परिस्थितियाँ हैं कार्य करने की। इन अनुकूल परिस्थितियों को आर्य समाज जैसे संगठनों को अपने स्वयं के संगठन के साथ साथ इस राष्ट्र के हित के लिए आगे बढ़ाने की आवश्यकता है।

उस कालखण्ड में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने महर्षि श्रद्धानन्द जी और अन्य आर्य ऋषियों ने कार्य किया था जब देश कथित रूप से गुलाम था। जब इस देश में फिरंगी राज कर रहे थे, भारत के सामाजिक ताने बाने को छिन्न भिन्न कर रहे थे, तब देश की स्वाधीनता के १८५७ के स्वातंत्र्य समर के साथ जो देश की स्वाधीनता की लड़ाई आगे बढ़ती है इसमें एक नई ऊर्जा का संचार होता है जब आर्य वीरों ने मिलकर इसमें कार्य किया चाहे वो वीर सावरकर हों, भाई परमानन्द हों या फिर लाला लाजपत राय से लेकर के पं.रामप्रसाद बिस्मिल तक एक लम्बी शृंखला है जिसने अपने आप को समर्पित किया था भारत की स्वाधीनता के लिए। देश के अन्दर क्रान्तिकारियों की मजबूत फौज को खड़ा करने का श्रेय आर्य समाज को जाता है। इस देश के अन्दर का भाव जागृत करने का श्रेय आर्य समाज को जाता है। भारत के अन्दर वेदों की पुनर्प्रतिष्ठा हो, इसका श्रेय आर्य समाज को जाता है और भारत के अन्दर आधुनिक शिक्षा जो जन-जन तक पहुंचाने का कार्य कर सके उसका श्रेय आर्य समाज को जाता है। समाज की जिस बुराई ने इस देश के समाज के ताने बाने को छिन्न भिन्न करके भारत के अन्दर अव्यवस्था और भारत को गुलामी की ओर धकेलने का कार्य किया था उसके खिलाफ आवाज उठाने का श्रेय आर्य समाज को जाता है। और इसके साथ साथ सैकड़ों वर्षों के बाद शुद्धि के विधान के माध्यम से अपने भूले भटके बन्धु बान्धव वापस अपने घर जा सकें इसको श्रेय यदि किसी संगठन को जाता है तो आर्य समाज को जाता है।

स्मृतियाँ कहती थीं कि किसी कार्य में कोई भूल गया हो भटक गया है उसे अपने कार्य में वापस ले लो। यह भी समझ में नहीं आता था कि इसका मतलब क्या है। यह देश पानीपत का युद्ध क्यों हारा था केवल इस देश की जातिवाद की पाखण्डी जो व्यवस्था थी केवल उसके कारण। पानीपत का युद्ध यदि यह देश जीता होता तो देश अंग्रेजों का गुलाम कभी न बना होता। हमें गुलामी की बेड़ियों में जकड़ने का दुस्साहस किसी के पास नहीं था लेकिन इसको समझने की सोच चाहिए थी और सचमुच उस कार्य को किया आर्य समाज ने। आज जो देश में वर्तमान के उभरते हुए भारत को देखते हुए जब उतनी ही तेजी के साथ अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर केन्द्र दिखाई देते हैं और षडयंत्रों को देखकर कभी मुझे चिन्ता होती है तो उसी समय मैं आर्य समाज जैसे संगठनों के इस भव्य जमावड़े के आयोजन को देखता हूं तो एक बार पुनः विश्वास के साथ कह सकता हूं कि नहीं, इस देश के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी के न्यू इण्डिया के उस

(शेष पृष्ठ 3 पर)

विनय पीयूष

त्याग भाव से भोगें जग को!

ईशा वास्यमिदꣳसर्व यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।

(यजु. : 40/1)

क्यों हो चाह किसी के धन की!

प्राणि-अप्राणि
जगत में जो भी
एक ईश से प्राप्ति सभी की,

भीतर-बाहर
वह ही वह है
एक ईश में व्याप्ति सभी की,

त्याग भाव से भोगें जग को
ऐसी सद्‌गति हो जीवन की!!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

आर्य महासम्मेलन - सादिच्छा का विस्फोट

इसके बावजूद कि आज आर्य समाज के पास पूर्ववर्ती युग की तरह पं.नरेन्द्र, आनन्द बोध सरस्वती, प्रकाशवीर शास्त्री, ओम प्रकाश पुरुषार्थी, रामनारायण शास्त्री, आचार्य रामानंद शास्त्री, स्वामी अभेदानंद की कोटि का कोई प्रभावशाली वक्ता तथा नेता नहीं है; इसके बावजूद कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा जिसके बलबूते अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के महासम्मेलन सम्पन्न होते हैं- दो गुटों में विभक्त हैं; (गनीमत है कि तीसरे गुट ने सम्प्रति अपनी दावेदारी वापस ले रखी है) बावजूद इसके कि सार्वदेशिक सभा जिसके बैनर तले महासम्मेलन आयोजित हुआ है; के पास अपना कोई भवन या कार्यालय नहीं है (क्रियाशील सार्वदेशिक सभा- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५, हनुमान रोड पर पूरी तरह आश्रित है) दिनांक २५ से २८ अक्टूबर २०१८ तक जिस प्रकार एक बृहत्तम भव्यतर और दिव्यता से परिपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१८ रोहिणी दिल्ली में आयोजित हुआ; निश्चय ही विक्षुब्ध आर्य जनता प्रकाश की किरणों के रूप में इस महासम्मेलन का अभिनन्दन करने के लिए अनायास अपने घरों से निकल पड़ी। मेरी राय में इस आर्य महासम्मेलन को सत्कर्म के लिए आगे बढ़ने के लिए लालायित दबी हुई इच्छाओं का महाविस्फोट समझना चाहिए।

सफलता का एक बड़ा कारण इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का मोदी युग में आयोजित होना है। सबसे बड़ी बात यह कि स्वयं राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने महासम्मेलन का उद्घाटन किया तथा प्रधानमंत्री के बाद दूसरे नम्बर पर देश के नेतृत्व की बागडोर संभालने वाले मंत्रियों में सफलतम श्री राजनाथ सिंह ने समापन किया और मध्य में योगी आदित्यनाथ ने आपने ओजस्वी सम्बोधन से आर्य समाज के गौरव को चरमोत्कर्ष प्रदान किया।

इसके अलावा श्री मनोहरलाल खट्टर मुख्यमंत्री हरियाणा के अविस्मरणीय योगदान को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। रामपाल और रामरहीम जैसे पाखंडियों की फैली हुई कलंक कालिमा को छिन्नभिन्न करने के कारण श्री खट्टर का राष्ट्रवादी कर्मठ व्यक्तित्व निखर आया है। दुनिया भर में मसालों के बादशाह के रूप में मशहूर महाशय धर्मपाल एम.डी.एच.की अविरल उपस्थिति ने मंच को गरिमा प्रदान की। बागपत के सांसद केन्द्रीय शिक्षा राज्यमंत्री डॉ.सत्यपाल सिंह ने अपने ओजपूर्ण व्याख्यान से भू.पू. प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की कमी किसी हद तक पूरी की।

आर्य महासम्मेलन की सबसे मजबूत और स्वर्णिम कड़ी- जिसने इस महा सम्मेलन को अक्षयकीर्ति और महिमा दे दी है- वह दस हजार कुंडीय वैदिक यज्ञ की प्रकाशमान व्यवस्था थी; जिसका आयोजन और संचालन स्वयं विश्व गुरु स्वामी रामदेव जी महाराज ने अपने अनन्य सहयोगियों के साथ मिलकर किया। अखिल भूमंडल में पहली बार विज्ञान और भक्ति का संगम देखने को मिला- जब समान वय, समान वेशभूषा धारण करने वाले दस सहस्र तरुण-तरुणियों ने मिलकर समवेत स्वरों में वेदमंत्रों का श्रुतिमधुर पाठ करते हुए स्वाहा स्वधा उच्चारण के साथ आहुतियाँ दीं जहाँ धूम्र के स्थान अध्यात्म की प्रभामयी आलोक रश्मियाँ प्रस्फुटित हो रही थीं। गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड के प्रतिनिधियों ने भारतीय अध्यात्म विद्या के इस ज्योतिर्मय दृश्य का अवलोकन किया तथा अपनी कीर्तिमान मालिका में इसे अंकित करके उसकी प्रतिष्ठा में चार चांद लगा दिये। आकाश मंडल में कभी कभी नक्षत्र मालाओं की क्रीड़ा धरतीवासियों के लिए कौतूहल का विषय बनती है- उससे यह दृश्य कमतर नहीं था। अन्य किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में चाहे वह मारीशस में हुआ हो, अमेरिका में अथवा भारत में। विश्व-मानव के लिए ऐसे स्वर्गीय सुषमा से आवेष्ठित दृश्य के अवलोकन का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ था।

जहाँ तक इतनी बड़ी संख्या में आर्य जनों की भागीदारी की बात है; जहाँ तक राज्यों और केन्द्रीय मंत्रिमंडलों के पदाधिकारियों के सम्मेलन में पधारने और अपने वक्तव्यों द्वारा महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की महत्ता के गुणगान का सवाल है, निश्चय ही यह आर्य सम्मेलन अतिविशिष्ट कोटि का माना जायगा तथापि यह आर्य महासम्मेलन कतिपय विचारणीय सुलगते हुए प्रश्न भी छोड़ गया है। इतने बृहद् महासम्मेलन की सफलता और सार्थकता तभी मानी जायगी, जब दो सार्वदेशिक सभाएँ एक हो जायें, वास्तविक सार्वदेशिक सभा को रामलीला मैदान, नई दिल्ली स्थित महर्षि दयानन्द भवन मिल जाये तथा वेद प्रचार की योजनाओं की वास्तविक धरातल पर अवतारणा हो।

माननीय अतिथियों के व्याख्यानों का प्रदर्शन तो निःसन्देह उत्साहवर्धक रहा किन्तु आर्य समाज के प्रचार प्रसार में जीवन खपा देने वाले जिन विद्वानों, तपस्वियों, भजनोपदेशकों, साधू, संन्यासियों ने आर्य समाज को इस प्रशंसनीय आसन तक पहुँचाया है- उनकी बौद्धिक और तार्किक क्षमता का और प्रभावशालिनी वक्तृताओं का प्रदर्शन नहीं हो पाया? यहाँ तक कि कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य- पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा- जिन्हें विगत दो अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की अध्यक्षता का गौरव प्राप्त है; की अध्यक्षता में आयोजित 'महर्षि दयानन्द सरस्वती-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' जैसे महत्वपूर्ण विषय पर आयोजित संगोष्ठी को अपेक्षित महत्व देने में आयोजक गण विफल रहे। आर्यजगत के गौरव स्वामी प्रणवानंद सरस्वती, दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह एवं श्री पूनम सूरी जैसे व्यक्ति भी हाशिये पर रहे। तथापि श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य, प्रकाश आर्य एवं माननीय सुरेशचन्द्र आर्य (सभा प्रधान) निश्चय ही बधाई के पात्र हैं; जिन्होंने अपनी कार्यकुशलता के बलपर अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-२०१८ का सर्वांग सुन्दर और भव्य आयोजन करके आर्यसमाज के अबतक के इतिहास में एक इतनी बड़ी लकीर खींच दी है, जिसके समक्ष पूर्व में खींची गई सभी लकीरें छोटी पड़ गई हैं।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८९

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

मुक्ति और बंध

य आत्मा अपहतपाप्मा विजरो विमृत्युर्विशोको ऽविजिघत्सोऽपिपासः सत्यकामः सत्यसंकल्पः सोऽन्वेष्टव्यः स विजिज्ञासितव्यः सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वश्च कामान् यस्तमात्मानमनुविद्य विजानातीति।।

स वा एष एतेन दैवेन चक्षुषा मनसैतान् कामान् पश्यन् रमते।।

य एते ब्रह्मलोके तं वा एतं देवा आत्मानमुपासते तस्मात्तेषां सर्वे च लोका आत्ता सर्वे च कामाः स सर्वांश्च लोकानाप्नोति सर्वांश्च कामान्य स्तमात्मान मनुविद्य विजानातीति।।

न मघवन्मर्त्य वा इदꣳ शरीरमात्तं मृत्युना तदस्या ऽमृतस्याऽशरीरस्यात्मनोऽधिष्ठानमात्तो वै सशरीरः प्रियाप्रियाभ्यां न वै सशरीरस्य सतः प्रियाप्रिययोरप- हतिरस्त्यशरीरं वाव सन्तं न प्रियाप्रिये स्पृशतः।। छान्दो।।

जो परमात्मा अपहतपाप्मा सर्व पाप, जरा, मृत्यु, शोक, क्षुधा, पिपासा से रहित, सत्यकाम सत्यसंकल्प है उसकी खोज और उसी को जानने की इच्छा करनी चाहिए। जिस परमात्मा के सम्बन्ध से मुक्त जीव सब लोकों और सब कामों को प्राप्त होता है; जो परमात्मा को जानके मोक्ष के साधन और अपने को शुद्ध करना जानता है सो यह मुक्ति को प्राप्त जीव शुद्ध दिव्य नेत्र और शुद्ध मन से कामों को देखता, प्राप्त होता हुआ रमण करता है।

ये जो ब्रह्मलोक अर्थात् दर्शनीय परमात्मा में स्थित होके मोक्ष सुख को भोगते हैं और इसी परमात्मा का जो कि सब का अन्तर्यामी आत्मा है उसकी उपासना मुक्ति की प्राप्ति करने वाले विद्वान् लोग करते हैं। उससे उनको सब लोक और

सब काम प्राप्त होते हैं अर्थात् जो-जो संकल्प करते हैं वह-वह लोक और वह-वह काम प्राप्त होता है और वे मुक्त जीव स्थूल शरीर छोड़कर संकल्पमय शरीर से आकाश में परमेश्वर में विचरते हैं। क्योंकि जो शरीर वाले होते हैं वे सांसारिक दुःख से रहित नहीं हो सकते।

जैसे इन्द्र से प्रजापति ने कहा है कि परमपूजित धनयुक्त पुरुष! यह स्थूल शरीर मरणधर्मा है और जैसे सिंह के मुख में बकरी होवे वैसे यह शरीर मृत्यु के बीच है सो शरीर इस मरण और शरीर रहित जीवात्मा का निवास स्थान है।

इसलिये यह जीव सुख और दुःख से सदा ग्रस्त रहता है क्योंकि शरीर सहित जीव की सांसारिक प्रसन्नता की निवृत्ति होती ही है और जो शरीर रहित मुक्त जीवात्मा ब्रह्म में रहता है उसको सांसारिक सुख दुःख का स्पर्श भी नहीं होता किन्तु सदा आनन्द में रहता है।

(प्रश्न) जीव मुक्ति को प्राप्त होकर पुनः जन्म मरणरूप दुःख में कभी आते हैं वा नहीं? क्योंकि-

न च पुनरावर्त्तते न च पुनरावर्त्तत इति।।

।।उपनिषद्वचनम्।।

अनावृत्तिः शब्दादनावृत्तिः शब्दात्।। शारीरक सू.।।

यद् गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमं मम।।

।। भगवद्गी.।।

(उत्तर) यह बात ठीक नहीं; क्योंकि वेद में इस बात का निषेध किया है-

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं च।।1।।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम। स नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेय मातरं च।।2।। (ऋ/म.१/सू.

इदानीमिव सर्वत्र नात्यन्तोच्छेदः।। सांख्य सू.।।

(प्रश्न) हम लोग किसका नाम पवित्र जानें? कौन नाशरहित पदार्थों के मध्य में वर्तमान देव सदा प्रकाशस्वरूप है। हम को मुक्ति का सुख भुगाकर पुनः इस संसार में जन्म देता और माता तथा पिता का दर्शन कराता है?।।1।। (-क्रमशः)

वेदांजलि

ईश्वरीय ज्ञान वेद और उसका स्वरूप

❑ पं.शिव कुमार शास्त्री
भू.पू.संसद सदस्य

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः।।

-ऋ. 9/97/34

शब्दार्थ-

(वह्निः) ईश्वर से प्राप्त ज्ञान का वाहक ऋषि (तिस्रः वाचः) तीन प्रकार की ऋक्, यजु और साम लक्षणयुक्त वाणियों को (ऋतस्य धीतिम्) सत्य की धारणा और (ब्राह्मण मनीषाम्) परमात्मा की सत्य-प्रज्ञा को (प्र ईरयति) लोक में प्रचारित करता है, इसलिए (गावः) वेद-वाणियाँ (गोपतिं पृच्छमानाः) वाणीपति परमात्मा से पूछती हुई-सी (यन्ति) बाहर जाती हैं, अर्थात् ज्यों की त्यों प्रकाशित होती हैं तथा (मतयः) वेदवाही ऋषियों की बुद्धियाँ (वावशानाः) वेद-प्रतिपादित पदार्थों की कामना करती हुई (सोमम्) सोमादि पदार्थों को (यन्ति) प्राप्त होती हैं।

व्याख्या-

इस मंत्र में चार बातें कही गई हैं- (1) सृष्टि के आदि में दयालु प्रभु ने अपने ज्ञान को ऋषियों के हृदय में दिया। (2) वह वेद-वाणी तीन प्रकार की है। (3) वे वाणियाँ (ज्ञान) ज्यों-की-त्यों मनुष्यों तक ऋषियों द्वारा पहुँचीं। ऋषियों ने अपनी ओर से उनमें कुछ भी परिवर्तन परिवर्धन नहीं किया। (4) सांसारिक पदार्थों का नामकरण भी वेद के आधार पर किया। अब क्रमशः एक-एक बात पर विचार कीजिये-

मनुष्य की अपनी कोई भाषा नहीं, अपना कोई ज्ञान नहीं। वह जहाँ उत्पन्न होता है, उसके माता-पिता और परिवार वाले जिस भाषा को बोलते हैं, उसी भाषा के शब्द उसके कानों से टकराते रहते हैं। धीर-धीरे उनके संस्कार हमारे मस्तिष्क पर जमते रहते हैं और हमारी जिह्वा सुनी हुई ध्वनियों का अनुकरण करके उस भाषा का प्रयोग करने लगती है। उत्पन्न होते ही किसी अंग्रेजी बालक को भारतीय परिवार में रख दिया जाय तो वह भारतीय भाषा बोलने लगेगा। इसी प्रकार उसका रहन-सहन और खान पान भी भारतीयों जैसा होगा। ठीक यही अवस्था भारतीय बालक की अंग्रेज परिवार में होगी। यद्यपि सामान्य व्यक्ति को यह बात बड़ी विचित्र सी लगती है कि पशु पक्षियों की और दूसरे प्राणियों की, सभी की उनकी कामचलाऊ बोलियाँ अथवा ध्वनियाँ हैं, किन्तु मनुष्य की नहीं। जो बालक गूँगे होते हैं, उनके न बोलने का कारण यह होता है कि वे बहरे होते हैं। कान द्वारा किसी ध्वनि को ग्रहण न कर सकने के कारण उनका जिह्वा द्वारा अनुकरण भी नहीं हो पाता, अतएव वे गूँगे होते हैं।

पशु और पक्षियों को जितने ज्ञान की आवश्यकता है, वह जन्म के साथ ही उन्हें प्राप्त हो जाता है, किन्तु उस ज्ञान का विकास वे नहीं कर सकते। वे कोई क्लास लगाकर अपना ज्ञान दूसरों में संक्रान्त नहीं कर सकते। मनुष्य की स्थिति इससे भिन्न है। वह दूसरों से ग्रहण करके ज्ञान की पूँजी अर्जित करता है और उस पर मनन करके उसका विकास भी करता है, अतः प्रत्येक दृष्टि से मनुष्य को ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता है।

इस उहापोह से सिद्ध हुआ कि ईश्वरीय ज्ञान के बिना मनुष्य सभ्य नहीं बन सकता। इसलिए दयालु प्रभु ने अपना ज्ञान मनुष्य के कल्याण के लिए चार ऋषियों के हृदय में दिया।

मंत्र की दूसरी बात है कि वेद हैं तो चार, किन्तु चारों वेदों के मंत्र तीन प्रकार के ऋक्, यजुः और साम रूप में हैं। इसलिए चार वेद होते हुए भी तीन वेद कहलाते हैं। जैसा कि शतपथ में कहा है-**'तद् यत्तत् सत्यं त्रयी सा विद्या'** अर्थात् जो कुछ सत्य है वही त्रयी विद्या (चार वेद) हैं।

मंत्र की तीसरी बात है कि प्रभु की वाणी प्राप्त तो हुई ऋषियों के द्वारा, किन्तु है वह विशुद्ध; ऋषियों ने अपनी ओर से उसमें कुछ नहीं मिलाया। क्योंकि मूलरूप में मनुष्य का अपना कोई ज्ञान है ही नहीं, अतः यह ठीक ही है कि ऋषियों ने अपनी ओर से उसमें कुछ नहीं जोड़ा।

मंत्र की चौथी बात है कि सांसारिक पदार्थों के नाम भी ऋषियों ने वेदों से शब्द ले-लेकर रक्खे। वेद में शरीर की नाड़ियों का वर्णन करते हुए **'इमं मे गंगे यमुने सरस्वती'** आदि शब्द ऋषियों को मिले। ऋषियों ने देखा जिस प्रकार ये नाड़ियाँ रक्त बहाकर शरीर की पुष्टि और रक्षा करती हैं, उसी प्रकार पृथिवी पर बहनेवाली नदियाँ भी पानी बहाकर प्रदेशों को सींचकर अनेक प्रकार की ओषधियाँ, फल और अन्नादि उत्पन्न करती हैं। इन गुणों की समानता को देखकर उन्होंने नदियों के नाम-गंगा, यमुना और सरस्वती आदि रख दिया। संसार में बिना नाम की कोई वस्तु नहीं है और वे सारे नाम ऋषियों ने वेद के शब्दों से रक्खे। व्यक्तियों के नाम भी इसीप्रकर रक्खे गए। वेद में विश्वामित्र शब्द सर्वप्रिय के अर्थ में आया। इस भाव को स्वीकृत करके लोक में व्यक्तियों के नाम भी वैसे रख दिए गए। कुछ लोग प्रचलित व्यक्तियों के नाम देखकर इस भ्रम में पड़ जाते हैं कि वेद में इतिहास है। वस्तुतः वेद का ऐतिहासिक व्यक्तियों से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। (श्रुति सौरभ से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११३

शपामस्तानन्यान् किमकरुणवैदेशिकजनान्
विनाशे संहारे नियतरुचिरेषान्तु सततम्।
अयं दोषोऽस्माकं विधटनपराणां लघुहृदां
प्रहारैर्व्याघातैर्मुहुरपि न किंचित्त्ववगतम्।।

ये विदेशी लोग तो हृदयहीन हैं ही,
और पराये हैं,
उन्हें क्या कोसें !
हमारे विनाश और संहार में
उनकी सदा रुचि तो रहनी ही थी !!
यह सारा दोष तो हमारा अपना ही है !!!
कितने छोटे दिल हैं हमारे और
आपस में कितने विघटित हैं !
बार-बार हमले होते रहे और
चोट पड़ती रही !!
हमने कुछ भी तो शिक्षा नहीं ली !!!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

आर्य समाज ने.....

कन्सेप्ट को साकार करने के लिए आर्य समाज जैसे संगठन खड़े हैं तो दुनिया की कोई ताकत इस मार्ग में कंटक नहीं बिछा सकती। और इस अवसर पर आज एक बात तो कह सकता हूँ कि २०२२ में यह देश अपनी आजादी के ७५ वर्ष पूर्ण कर चुका होगा। यह देश अपनी हीरक जयन्ती मना रहा होगा तब हम इस देश की वर्तमान और आगे वाली पीढ़ी को क्या दे रहे हैं यह बताने के लिए यह सम्मेलन यह कार्यक्रम और इस प्रकार के आयोजन पूरे देश के अन्दर होते हुए दिखाई देने चाहिए। एक ऐसा भारत कैसा भारत होना चाहिए और जो हमारे पुराण भी कहते हैं कि ऐसा भारत जो जातिवाद से भाषावाद से क्षेत्रवाद से मुक्त हो। एक ऐसा भारत जो आतंकवाद से नक्सलवाद से और किसी भी प्रकार के अलगाववाद से मुक्त हो। एक ऐसा भारत जो गंदगी से मुक्त हो अपराध से मुक्त हो भ्रष्टाचार से मुक्त हो। एक ऐसा भारत जिस भारत में जाति लिंग के आधार पर किसी के साथ कोई भेदभाव न होता हो। एक ऐसा भारत जो स्वच्छ हो जो स्वस्थ हो और जो समर्थ हो; उस समर्थ भारत के निर्माण के लिए आर्य समाज जैसे संगठनों की एक बहुत बड़ी भूमिका होनी चाहिए।

एक बहुत बड़ी भूमिका है हम सबकी। भाइयों बहनों हम सबको एक होना चाहिए। महर्षि अरविन्दो ने एक बात कही थी वे इस बात से निश्चिन्त थे कि अगर इस देश के अन्दर वेदों के पुनर्प्रतिष्ठा का श्रेय आर्य समाज को दिया जा सकता है तो उन्होंने इस बात को भी कहा था कि भारत और भारत में रहने के लिए हमें अपने राष्ट्रधर्म को भी पहचानना पड़ेगा। हमारा राष्ट्रधर्म हमारा सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए। आज का युग का हमारा प्रधान धर्म राष्ट्र का धर्म है। और आज के दिन का सबसे बड़ा संताप का कारण बनता है जब हम अपने राष्ट्रधर्म पर प्रहार करते हुए देखकर मौन रह जाते हैं। याद रखना महाभारत में द्रौपदी ने यह प्रश्न बार बार पूछा था कि इस चीर हरण का कारक कौन है? किसी के पास कोई जवाब नहीं था। महात्मा विदुर खड़े हुए उन्होंने कहा था कि तिहाई पाप अपराधियों का तिहाई पाप सहयोगियों का और तिहाई पाप मूक दर्शकों का भी है। याद रखना भारत का चीर हरण करने वाले लोग जब भारत को जाति के आधार पर बांटने का कुत्सित प्रयास कर रहे हों, बात क्षेत्र और भाषा के आधार पर उसको विभाजित करने का कुत्सित कार्य कर रहे हों, भारत के न्याय के आधार पर भारत के सामाजिक तानेबाने को छिन्न भिन्न करने का प्रयास कर रहे हों, भारत के अन्दर आतंकवाद नक्सलवाद और अलगावावाद को बढ़ाने भड़काने का कुत्सित प्रयास कर रहे हों और भारत के महापुरुषों के प्रति अपमान जनक टिप्पणी कर रहे हों, उस समय हम सबका दायित्व और भी ज्यादा बढ़ जाता है। और दायित्व यह कि हम न अपराधी हैं न अपराधियों के सहयोगी बन सकते हैं और न ही मौन बनकर तमाशगीन बने रहेंगे। हम अपने उत्तर दायित्व का निर्वाह करने के लिए तैयार होंगे। और उत्तरदायित्व हमारा यही कि हमारा राष्ट्र धर्म है और राष्ट्रधर्म वही जो हमें एहसास करा सके कि भारत माता के सुयोग्य पुत्र के रूप में अपने उत्तरदायित्वों में से एक पुत्र का अपनी मां के प्रति एक पुत्र का अपनी मातृभूमि के प्रति क्या दायित्व होने चाहिए उस दायित्व के निर्वहन करने का एहसास आर्य समाज जैसे संगठन हम सबको करा रहे हैं। और इसलिए भाइयों बहनों आज हम सबको इस समय आगे बढ़ने की आवश्यकता है।

आर्य समाज के बहुत महत् कार्य हैं। मैं देखता हूँ। और सचमुच उस कालखण्ड में स्वदेशी का आन्दोलन चलना हो १८७५ से चलने वाली इस यात्रा को आप देखिए। पहली बार देश के अन्दर स्वाधीनता की लड़ाई में देशी एक मुद्दा बने आर्य समाज से यह काम शुरू होता है। आर्य समाज इसको प्रारम्भ करता है। आर्य समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कदम उठाये। डी.ए.वी.संस्थाएँ, गुरुकुल की प्रणाली, इस रूप में एक संस्कार युक्त शिक्षा देश के अन्दर दे रही थीं। हम कहाँ पर चूक गये? आज शिक्षा के नाम पर स्वास्थ्य के नाम पर सौदेबाजी हो रही है। इस सौदेबाजी को रोकने के लिए फिर से डी.ए.वी. की संस्थाओं और गुरुकुलों को अग्रणी भूमिका में लाना होगा जहाँ हमारे सारे कार्यक्रमों की शुरूआत एक वैदिक यज्ञ के साथ गायत्री मंत्र के साथ प्रारम्भ हो, पूरा वातावरण एक आध्यात्मिक परिवेश में बदल जायगा। क्या इसको फिर से हम दे पायेंगे। क्या हम फिर से श्रुति के वेद ज्ञान को लाखों में ले जायेंगे। जिसको कभी श्रद्धानन्द जी ने गाँव गाँव जा करके, एक एक जगह जा करके लाखों की संख्या में घर वापसी के कार्यक्रम के साथ एक नई अलख जगाने का कार्य किया था। कितना बड़ा कार्य किया उन्होंने। और ये काम तब किया था जब अनुकूल परिस्थियाँ नहीं थीं। आज हम क्यों पिछड़ गये? क्यों उससे पीछे हो गये? यह हम सबके चिन्तन का विषय होना चाहिए। भाइयो बहनों! जैसा हम संस्कार देंगे जैसा हम वहाँ का आसपास का इस प्रकार का वातावरण देंगे उसके परिणाम भी उसी रूप हम सबके सामने आयेंगे। वर्तमान पीढ़ी को इसके साथ अधिकाधिक जोड़ने की आवश्यकता है।

मैं अक्सर इस बात को सोचता था कि डॉ.सत्यपाल सिंह जी पुलिस कमिश्नर हैं। लेकिन इनके मेरे साथ विचार क्यों मिल जाते हैं। पहले से हमारी कोई जान पहचान नहीं थी। जब ये काठमांडू के आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में मिले तब से मुझे लगा कि यह आदमी आर्य समाज से जुड़ा है इसलिए इससे मेरे विचार ज्यादा मिलते हैं। तब ये साफ हो पाया। विचारों में भी साम्यता दिखती है। और यह हमलोगों को जोड़ने का एक मंच बनता है। आर्य समाज ने जो कार्य किये हैं आज एक बार उसको एक नये तरीके से करने की आवश्यकता है। और आज जो ये बात यहां सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मेरे सामने जो कही है। मैं उनको इस बात से आश्वस्त करना चाहता हूं। उ.प्र.में हमलोगों ने एण्टी भू माफिया टास्क फोर्स बनाया है। आर्य प्रतिनिधि सभा अपनी सम्पत्तियों का ब्यौरा उपलब्ध करवा दे जो कहीं कोई भू माफिया ने कब्जा किया होगा उसे मैं बहुत जल्दी ठीक करवा दूँगा। ये सम्पत्तियाँ आध्यात्मिक आयोजन के हिस्से भारत के लिए उपयोगी हैं। और कोई एक व्यक्ति इन पर कब्जा करता है, अपने स्वार्थों के लिए। ये कभी उसको फलेगी नहीं। वो कभी नहीं इसका कुछ कर पायेगा। हजारों हेक्टेयर भूमि को हमने भू माफियाओं से खाली कराया है और इस खाली कराने में जो खर्चा होता है उस भू माफिया से उसूली भी करते हैं। यही नहीं, जब हम आये थे। आप जानते होंगे उप्र के अन्दर पहले से पिछली सरकारों ने जितने भी हमारे धार्मिक आयोजन होते थे सांस्कृतिक आयोजन होते थे, सबको प्रतिबन्धित कर दिया। कोई जन्माष्टमी पर रोक लगा रहा है, कोई कांवड़ियों पर रोक लगा रहा है, कोई किसी पे रोक लगा रहा है। हमने कहा सभी कार्यक्रम पूरी भव्यता के साथ करो, शालीनता के साथ करो, अनुशासन के साथ हों, ये सभी समाज की चेतना को विकसित करने का, जोड़ने का काम करते हैं। और पूरी भव्यता के साथ सारे आयोजन उ.प्र.में हो रहे हैं। पहले उप्र में हर गली, हर मुहल्ले में अवैध बूचड़खाने चलते थे। मुझे जब मेरी पार्टी ने उप्र में मुख्य मंत्री का दायित्व दिया। और मैंने कहा कम से कम ये जो जीव हत्या उप्र में हो रही है इसका दायित्व मेरे ऊपर आया है। मैंने कहा सारे के सारे बूचड़खाने बन्द कर दो। और एक दिन में बन्द हो गये। कोई कोर्ट में गया कोई कहीं गया। मैंने कहा जाते रहिये, उप्र में कोई अवैध काम तो नहीं ही करने देंगे। और भाइयो बहनों आज हम सब उसमें सफल हैं। बहुत सकून से हैं। लोग बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ रहे हैं। हम जैसा वातावरण देंगे, जैसी दृष्टि होगी, वैसी ही सृष्टि होगी। अच्छी दृष्टि रहेगी, अच्छी सृष्टि अपने आप सामने आ जायेगी।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वह दृष्टि दी थी इस देश को गुलामी के उस कालखंड में जिसने भारत की आजादी का ये स्वाद चखने के लिए आज हम सबको ये अवसर दिया है। आज देश स्वाधीन है आर्य समाज जैसे संगठनों के त्याग और बलिदान की एक लम्बी शृंखला उसमें है। एक लम्बी परम्परा उसमें है। हम सबको मिलकर इसके साथ जुड़कर के आगे बढ़ना चाहिए। और मैं फिर कहूंगा हरियाणा में बहुत कार्य आर्य समाज ने किया। पश्चिमी उप्र में भी और उप्र में भी हर जगह है। लेकिन उसको फिर से उन टोलियों के साथ आर्य ऋषि आर्य सन्तों को एक बार फिर से अपनी इस टोली को लेकर के गाँव गाँव जाना होगा। संस्कारयुक्त कार्यक्रम को आगे ले जाना होगा उसको और तेज करना होगा। और इस दिशा में जो कार्य हो रहे हैं उसका मैं उल्लेख करना चाहूंगा। अभी हाल ही में एक कार्यक्रम में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल को गोरखपुर में आमंत्रित किया था। और मैं उनका अभिनन्दन करना चाहूंगा उन्होंने आर्य समाज जैसी संस्थाओं के साथ साथ अपने गुरुकुल के माध्यम से जो एक नई शुरूआत की है। संस्कार के साथ साथ स्वदेशी स्वावलम्बन की दिशा में कैसे अग्रसर हो सकते हैं इस दिशा में प्रयास उन्होंने अपने गुरूकुल के माध यम से आगे बढ़ाया है। वह अभिनन्दनीय है। जब मैं गुरुकुल की इन परम्पराओं को देखता हूँ तो मुझे कभी कभी महर्षि विश्वामित्र का आश्रम याद आने लगता है। याद करिये उस कालखंड को। जब मारीच और सुबाहु मारीच को रावण कहता है कि इन आर्य ऋषियों को यज्ञ मत करने दो क्योंकि ये यज्ञ इनके अनुसंधान के कारक हैं। ये नये नये अनुसंधानों से राक्षसों को रोकेंगे। और इन अनुसंधानों के माध्यम से ये लोग अपने आर्यावर्त को समृद्ध करेंगे। और यदि आर्यावर्त समृद्ध हो जायेगा तो ये राक्षस जो अपना मायाजाल फैलाते हैं ये नहीं फैला पायेंगे। याद करिये। रावण मारीच और सुबाहु को भेजता है, जाओ विश्वामित्र के यज्ञ को विखण्डित करो। विघ्न डालो। यज्ञ न होने दो। ये यज्ञ वही हैं जिसमें आज आप आचार्य देवव्रत जैसे ऋषि परम्परा की वर्तमान पीढ़ी आज नये नये अनुसंधान के माध्यम से इस सम्पूर्ण आर्यावर्त की समृद्धि की दिशा में कुछ नयापन देने का कार्य कर रहे हैं। भारत की परम्परा कृषि प्रधान परम्परा है। और कृषि प्रधान परम्परा में दो उसके आधार हैं। दो वस्तु उसके आधार हैं। उसको किस प्रकार उन्होंने पुनर्जीवित किया है जिस प्रकार से उन्होंने पुनर्स्थापित करने का कार्य किया है वो आज हमारी इस जीरो बजट खेती को जिस तेजी के माध्यम से उस शोध को व्यापक अध्ययन के माध्यम से और उसको व्यावहारिक धरातल पर उतार करके किसानों की समृद्धि के लिए जो नये कार्य प्रारम्भ किये हैं। भाइयो बहनों! ये अभिनन्दनीय कार्य हैं। आर्य समाज को वास्तव में एक बार फिर अपनी इन गुरुकुल की परम्पराओं को एक बार पुनर्जीवित करके इस प्रकार के नये शोध को आगे के लिए अपने आपको तैयार करना होगा।

मैं आज इस अवसर पर एक बार पुनः कहना चाहता हूं कि हमने उ.प्र. के पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन किया है। उ.प्र.में हमारे पास बेसिक शिक्षा में वर्तमान में एक करोड़ ७७ लाख बच्चे हैं और एक करोड़ ७७ लाख बच्चों को हम बैग देते हैं दो यूनीफार्म देते हैं बुक्स देते हैं जूता और मोजा भी देते हैं। और उनकी स्थान दिया गया है जिससे एक से आठवीं तक के क्लास के सभी बच्चों को पाठ्यक्रम में उन महापुरुषों की जीवनी को पढ़ायें। उनमें महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द को भी शामिल किया। हमने एक दूसरा कार्य किया। हमने कहा महापुरुषों के नाम पर विद्यालयों में छुट्टी न करो बल्कि उस दिन उस महापुरुष के नाम पर गोष्ठी का आयोजन करो उस पर लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करो और उसी महापुरुष के नाम पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करके उस महापुरुष के जीवन चरित्र के बारे में इन बच्चों को बताओ। जिससे वे उससे प्रेरित हो सकें। नहीं तो हम क्या करते हैं किसी महापुरुष की जन्म जयन्ती आती है उनका जन्म दिन पड़ता है तो हर एक जाति खड़ी हो जाती है कि ये मेरी जाति के महापुरुष हैं इनके नाम पर छुट्टी करो। मैंने कहा जब ३६५ दिन हो जायेंगे उसके बाद छुट्टी कौन देखेगा? इसलिये छुट्टी की छुट्टी कर दो और उस दिन उस महापुरुष की जीवनी विद्यालयों में पढ़ाओ महापुरुष किसी जाति का नहीं होता है। महापुरुष पूरे समाज को होता है और समाज उससे प्रेरणा पाता है। उससे प्रकाश पाता है। इसलिए उस महापुरुष की जीवनी को पढ़वाओ। क्योंकि आर्य समाज एक संगठन है एक आन्दोलन है। ये भारत के स्वावलम्बन का आन्दोलन भारत की संस्कृति का आन्दोलन भारत को संस्कार वान बनाने का आन्दोलन और इस आन्दोलन का हिस्सा हर भारतीय को बनना चाहिए ।

भाइयों और बहनों! मैं आप सबके बीच आया हूँ और आपसे अनुरोध करूँगा कुम्भ के आयोजन में प्रयाग में भव्य कुम्भ का आयोजन होगा जनवरी २०१९ में। मकर संक्रान्ति से प्रारम्भ होगा और शिवरात्रि तक चलेगा। इस कुम्भ में पहली बार इस दिव्यता के साथ आयोजन करने जा रहे हैं। और १५ दिसम्बर के आसपास भारत में दुनिया के जितने भी मिशन हैं जितने भी अम्बेसडर भारत मे रहते हैं जितने भी हाई कमिश्नर्स भारत में दुनिया के रहते हैं। इन सबका एक दिन का दौरा हम कुम्भ का कराने जा रहे हैं। और आर्य समाज को भी मैं आमंत्रित करता हूं कि ४४ दिन तक आर्य समाज का भी कैम्प चले। सनातन धर्म की पुर्नप्रतिष्ठा के लिए जैसे शंखनाद आज किया वैसे कुम्भ के अन्दर भी किया जाये जिससे दुनिया में विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना है महर्षि दयानन्द के उस वैदिक उद्घोष को हमें 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के इस उद्घोष को हमें जन जन तक पहुंचाने के लिए वहां जाना पड़ेगा। और कुम्भ का आयोजन आपके सामने एक अवसर होगा और इस अवसर पर एक बार पुनः मैं आप सबको आमंत्रण देता हूँ। मैं पुनः आयोजकों को हृदय से साधुवाद देता हूँ। महाशय धर्मपाल जी को जो इस उम्र में भी इस आयोजन के साथ जुड़े हैं अब तक तो वह एमडीएच मसाला ही चला रहे थे और मुझे लगता है एमडीएच मसाला उन्होंने आर्य समाज मसाले के साथ चलाया है। यह ऊर्जा है जो समाज के लिए लाभकारी होगी। आप सबको इस आयोजन के लिए मेरी शुभकामना और साधुवाद देते हुए वाणी को यहीं विराम देता हूँ। धन्यवाद! जयहिन्द!

(आर्य महासम्मेलन से हमारे प्रतिनिधि अमित वीर त्रिपाठी की रिपोर्ट, प्रस्तुतकर्ता–आलोक वीर आर्य)

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' वर्ष-२१, अंक-४, अक्टूबर २०१८ का अंक मिला। आद्योपान्त देखा। इसका मुखपृष्ठीय श्री आनन्द कुमार आर्य जी का लेख 'आर्य सभ्यता-संस्कृति को नष्ट-भ्रष्ट करने का षडयंत्र आज जोरों पर है' अतीव विचारोत्तेजक एवं राष्ट्रकल्याण के उदात्त भाव से पूर्ण है। इसमें आर्यजनों को अपनी महान सांस्कृतिक विरासत को अपनाये रहने हेतु सजग-सचेत बने रहने का आह्वान किया गया है। 'विनय पीयूष' शीर्षक में श्री अमृत खरे ने बड़े महत्त्वपूर्ण यजुर्वेदीय मंत्र का सुन्दर रूपान्तर प्रस्तुत किया है, जो आपसी मैत्री एवं सद्भाव का प्रेरक है। 'सत्यार्थ प्रकाश वार्ता' शीर्षक से प्रस्तुत 'मुक्ति और बंध' अंश में दर्शन एवं आध्यात्म परक गम्भीर विचार हैं। 'वेद प्रवचन' शीर्षक आलेख के अन्तर्गत पं.शिव कुमार शास्त्री जी ने संसार को आर्य (श्रेष्ठ) कैसे बनाएँ? प्रश्न का व्यावहारिक समाधान दिया है। 'दयानन्द चरितम्' का श्लोक सदैव की भांति ही सुन्दर प्रेरणाप्रद है। 'वाचनालय से' शीर्षक के अन्तर्गत दिए गए विचारकों के विभिन्न अभिमत उनके गहन चिन्तन को परिलक्षित करते हैं। 'शुभाकांक्षा' में अनेक साहित्यकारों-विचारकों डॉ.चन्द्रपाल शर्मा, डॉ.महेशचन्द्र 'विधु', श्रीमती प्रमोद कुमारी, श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' एवं सुश्री नमिता वैश्य के मन्तव्य हैं, जिनसे पर्याप्त वैविध्यपूर्ण वैचारिक ऊर्जा प्राप्त होती है। श्री आनन्द कुमार का आलेख 'मनुष्य का विराट रूप' अत्यंत सतर्क विचारणा का सुपरिणाम है। शास्त्रार्थ महारथी पं.रामचन्द्र देहलवी का व्याख्यान 'ईश्वर पूजा का वेदिक स्वरूप' उपासना के आडम्बर का भण्डा फोड़कर उसका असली रूप प्रस्तुत करता है। 'काव्यायन' का तो कहना ही क्या? राष्ट्रकवि गुप्त जी की 'भारत भारती' का उद्धृतांश, महीयसी महादेवी वर्मा जी का गीत हमें आज भी महती प्रेरणा प्रदान करने में समर्थ है। इसके अतिरिक्त श्री महेशचन्द्र द्विवेदी जी का 'उद्बोधन गीत' सामयिक परिवेश को लेकर गहरी प्रतिक्रिया से आन्दोलित- उत्प्रेरित करता है। डॉ. कैलाश निगम जी का छन्द भी इसी कड़ी को वाणी देता है। श्री 'विनम्र' जी का गीत महर्षि दयानन्द सरस्वती की महिमा को उजागर करता है। श्री बांके बिहारी 'हर्ष' के मुक्तक भी वर्तमान परिवेश को रूपान्तर करते हैं। 'आर्य संस्कृति पर प्रहार पर प्रहार' शीर्षक आपका सम्पादकीय आज की यथार्थ स्थिति को उजागर करता हुआ अपने गौरवशाली अतीत के मर्यादित जीवनादर्श का अतीव प्रेरक आख्यान प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक गतिविधियों की सूचनाएँ भी अंक में विद्यमान हैं।

वस्तुतः यह 'वार्ता' 'लघुता में प्रभुता' या 'गागर में सागर' का उत्तम निदर्शन है। ऐसे उच्चस्तरीय दिशादर्शक पत्र के प्रकाशन के लिए अनेकशः हार्दिक बधाइयाँ।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
78, त्रिवेणी नगर, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता अक्टूबर अंक में कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के आर्य समाज के प्रति प्रकट उद्गार सटीक, सारपूर्ण एवं समसामयिक हैं। उन्होंने 'आर्य समाज आन्दोलन' को पूर्ण सफल और साकार करने के लिए जो सुझाव दिए हैं, वे सर्वथा अनुकरणीय और विचारणीय हैं। आज बच्चों की शिक्षा संस्कृति वैदिक परम्परा के अनुकूल नहीं है। अस्तु मेरा इस दिशा में विनम्र सुझाव है कि यदि आर्य समाज में बालकों को वैदिक शिक्षा के साथ उनके उद्यम, सेवा आदि से उनका भविष्य सुनिश्चित सुव्यवस्थित किया जाए तो वे निश्चित रूप से इस आन्दोलन से जुड़ेंगे। जैसा कि आपने सम्पादकीय में उल्लेख किया है कि पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीयता को इस सीमा तक जकड़ लिया है कि जन नायक तक संज्ञाशून्य दिखते हैं। आर्य संस्कृति की धारा क्षीण हो रही है, यह चिन्तन का विषय है। 'वाचनालय से' और 'अक्षर लोक' स्तम्भ दीर्घ अन्तराल से प्रकट हुए हैं तथापि इसमें प्रदत्त विषयवस्तु सराहनीय है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की कालजयी कविता आर्यशक्ति उर्ज्वसित करती है। भारत का गौरवशाली अतीत शतशः नमनीय है और वर्तमान के लिए प्रेरणास्रोत भी है। अन्य कविताओं में डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', डॉ. कैलाश निगम, महेश चन्द्र द्विवेदी, महादेवी वर्मा की काव्याभिव्यक्ति प्रशंसनीय है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भारतवर्ष ही नहीं, विश्व के लिए भी गौरवपूर्ण आह्लादकारी विराट आयोजन है जिससे जनमानस में महर्षि दयानन्द जी तथा आर्य समाज के प्रति सद्भावना जाग्रत होगी। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' मात्र नारा नहीं आन्दोलन चलना चाहिए। आर्य जन चिन्तन मनन को क्रियान्वित करें। आओ सोच-विचार करें,

क्यों हुआ आर्य-संस्कृति का ह्रास।
दमक रहा था आर्य-सूर्य जो,
क्यों उसको घेरे खग्रास।
भारत वर्ष विश्व गुरु होगा,
वेद-ज्ञान के ही बल पर।
भ्रष्टाचार, भूख, भय, भ्रम का,
प्रथम मिटायें कटु अनुप्रास।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

प्रसन्नता का विषय है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में आयोजित हुआ जिसमें देश के राष्ट्रपति सहित विश्व के अनेक आर्य विचारक सम्मिलित हुए। इस अवसर पर कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य के आर्य लोक वार्ता के अक्टूबर अंक में विस्तृत विचार पढ़कर अच्छा लगा। उन्होंने आर्य समाज के उत्थान के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हुए उत्तम सुझाव प्रदान किये हैं जो पूर्णतः ग्रहणीय हैं। वास्तविकता यह है कि भारत में वैदिक परम्परा के (विरुद्ध) समान्तर पाश्चात्य संस्कृति की तीव्रधारा बह रही है और देशवासी उससे मोह ग्रस्त हैं। इसके लिए देश की सारी व्यवस्था पद्धति आर्य संस्कृति के अनुसार ठीक करनी होगी। यह बड़ा काम है जो मात्र विचारों से नहीं पूर्ण होगा। सरकार को मन से सहयोग देना होगा। आपने सम्पादकीय में कहा है कि माननीय न्यायालय द्वारा भारतीयता पर प्रहार हुए किन्तु इस विषय में संत महात्मा, धर्म गुरु, नेता पक्ष-विपक्ष सभी मूक हो गए। ऐसे में देश का दुर्भाग्य कौन बदल सकता है? मात्र हो हल्ला और शब्दजाल से कुछ नहीं होगा। 'वेद प्रवचन' में 'संसार को आर्य कैसे बनाएं' उत्तम विचार दिए गए हैं। 'वाचनालय से', 'विनय पीयूष'(सब में प्रीति धरो), 'ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप' आदि स्तम्भों में अच्छी जानकारी दी गयी है। काव्यायन में कालजयी कविताओं सहित सभी रचनाकारों की श्रेष्ठ कविताएं हैं जो अत्यंत रोचक और विचारणीय हैं। 'अक्षर लोक' में नयी प्रकाशित पुस्तकों के बारे में संक्षिप्त जानकारी अत्यंत उपयोगी है। आपके सद्प्रयास को हार्दिक नमन।

-नमिता वैश्य, अध्यापिका,
प्रा.पा.खालेगाँव, मसकनवा, गोण्डा (उ.प्र.)

***

बहुत दिनों बाद आपका डाक से भेजा हुआ समाचार विचार पत्र प्राप्त हुआ। आपके प्रकाशन से जुड़ने में जो आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है, वह अन्यत्र कहीं भी प्राप्त नहीं होती है। आपका सम्पादकीय लेख, आर्य मित्रों के समाचार और विचार पुष्ट साहित्यिक रचनाएँ और विविध आयोजनों के समाचार मन को मुग्ध कर देते हैं। काव्यरस पीयूष की आन्तरिक अनुभूतियाँ भी मिल जाती हैं। कभी समय निकालकर सीतापुर पधारें। सहज विनम्र भाव सहित।

-अवधेश शुक्ल
अध्यक्ष, हिन्दी साहित्य परिषद, सीतापुर

***

'आर्य्य लोक वार्ता' के अक्टूबर-१८ अंक का ध्यान से अध्ययन किया। सदैव की भांति सम्पादकीय अनुपम है। मुख्य पृष्ठ पर कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य की प्रस्तुति समीचीन है। आज समय की पुकार है कि सभी वैदिक विद्वान तथा महर्षि स्वामी दयानन्द के सच्चे अनुयाइयों को एकजुट होकर अपने अपने प्रदेशों में जिलों में समाज में फैली कुरीतियों, पाखण्डों को समाप्त करने का सदैव प्रयास करना चाहिए। वैदिक विद्वान व शिक्षाविद् श्री आनन्द कुमार आर्य ने जिन बिन्दुओं को दर्शाया है, उन पर कार्य करें। पृष्ठ २ पर 'वेद प्रवचन' स्तम्भ में वैदिक विद्वान पं.शिवकुमार शास्त्री की प्रस्तुति 'संसार को आर्य कैसे बनाएं' हृदयस्पर्शी है। आज अधिकांश पाठक बुद्धिजीवी व आर्यसमाजी हताश हो रहे हैं कि हम संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ कैसे बना सकते हैं- यह तो असम्भव लगता है क्योंकि ठोस कदम कोई नहीं उठा रहा है और विकास न होकर पतन हो रहा है। शास्त्री जी ने प्रस्तुति के अन्त में जो सुझाव दिए हैं, उनके अनुसार यदि हम सभी अपने जीवन जीने की शैली वेदों में दी गई शिक्षाओं के अनुरूप अपनाएं तो श्रेयस्कर होगा। श्री अमृत खरे जी का 'वाचनालय से' स्तम्भ रुचिकर व लाभदाय है। अंतिम पृष्ठ की सभी सूचनाएं ज्ञानवर्द्धक व लाभकारी हैं। पृष्ठ ७ पर भी जो समाचार विभिन्न प्रदेशों व स्थानों पर हुए आयोजनों के विषय पर प्रकाशित हुए हैं वे हृदयग्राही हैं। आर्य लोक वार्ता के निरन्तर विकास की मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ।

-कमलेश पाल
योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

***

व्यक्ति-विशेष

आर्य समाज लखनऊ की महत्तम उपलब्धि

पं.राम प्रसाद श्रीवास्तव

आर्य समाज लखनऊ की एक महत्तम उपलब्धि हैं आर्य पुरोहित पं.राम प्रसाद श्रीवास्तव। आपको पौराणिकता की गहन गुफा से बाहर निकाल कर वेदों के प्रकाश क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने का श्रेय आर्य समाज शृंगार नगर लखनऊ के संस्थापक सदस्य, निर्माणकर्ता, विस्तारक, महोपदेशक स्वर्गीय पं.हरिवंशलाल मेहता को जाता है।

सौम्य आकृति, शालीनता की प्रतिमूर्ति श्रीवास्तव राम प्रसाद जी का जन्म २३ जुलाई १९३३ को हुआ था। १९५६ में आपने स्नातक उपाधि प्राप्त की और मेहता जी की सत्प्रेरणा से आपने आर्य समाज चन्द्र नगर की नियमित सदस्यता ग्रहण की। जहाँ पूर्व प्रधान स्व.यशपाल दीवान की अध्यक्षता में आपने पांच वर्षों तक निरन्तर मंत्री तथा पुरोहित के रूप में कार्य किया। इस अवधि में श्रीवास्तव जी के शब्दों में- 'मैंने सैकड़ों वैदिक विवाह तथा सहस्रों अन्त्येष्टि तथा अन्य संस्कार सफलता पूर्वक सम्पन्न कराये।' श्रीवास्तव जी ने राष्ट्रीय पुरोहित शिविर पातंजल योगधाम न्यास देहरादून हरिद्वार से दो बार प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने अपने बैच में प्रथम स्थान के साथ ही कई विषयों में विशेष योग्यता प्राप्त की।

सन् २००२ में आर्य समाज राजाजीपुरम के एक विशेष अधिवेशन में आप आर्य लोक वार्ता सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य के सम्पर्क में आये। इसी वर्ष आपने 'वैदिक परिभाषा' पुस्तक की रचना की जिसका भव्य विमोचन समारोह डॉ.वेद प्रकाश आर्य द्वारा सम्पन्न हुआ था। लखनऊ तथा रायबरेली से प्रकाशित वैदिक समाचार पत्र 'नवसत्ता' के 'विचार मंच' स्तम्भ में आपके लेख तथा विचार अक्सर प्रकाशित होते रहे हैं। ३० सितम्बर २०१८ को नगर आर्य समाज रकाबगंज लखनऊ के तत्वावधान में मुख्य अतिथि माननीया संयुक्ता भाटिया मेयर लखनऊ द्वारा आपको प्रशस्ति पत्र, अंगवस्त्रम् एवं वैदिक साहित्य सत्यार्थ प्रकाश समर्पित कर सम्मानित किया गया। पहले आपका साकेत पुरी, आलमबाग में निवास था किन्तु आजकल आप गोमती नगर विस्तार में रहते हैं। आपका मोबाइल नं. है-६४१५५२४१५३। 'आर्य लोक वार्ता' की आपके सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीर्घायुष्य की कामनाएँ। ***-सम्पादक***

यात्रा विवरण

मेरी मेरठ-मवाना यात्रा

मैं लखनऊ से दिल्ली, मेरठ, मवाना व अन्य स्थानों, ग्रामों में २३ अगस्त से ५ सितम्बर २०१८ तक रहा। इस यात्रा में मैंने आर्य लोक वार्ता के कुछ पुराने अंकों की प्रतियां व कुछ जनवरी १८ से जुलाई १८ की प्रतियों को पाठकों व परिचितों को उपलब्ध कराया। कुछ नए साहित्यकारों, कवियों व बुद्धिजीवियों से प्रथम बार भेंट कर प्रसन्नता हुई। उन्हें भी प्रतियां दीं। मेरठ-मुजफ्फरनगर, मवाना, हस्तिना पुर, ग्राम कुण्डा व बहजादका में भी वे प्रतियां दीं जो उन्हें डाक के द्वारा नहीं मिल पा रही थी।

शिक्षक दिवस समारोह तथा आर्य वानप्रस्थाश्रम, आर्य समाज मंदिर हस्तिनापुर की व्यवस्थाओं को नजदीक से देखा। वेद प्रचार सप्ताह, रक्षाबंधन व जन्माष्टमी के पर्वों के मध्य मेरठ के विभिन्न आर्य समाजों में उत्सवों में भी सम्मिलित होने का अवसर मिला। हमारे भाई कर्नल पाल प्रमोद व उनकी सहधर्मिणी श्रीमती प्रतिभा पाल के गत ४ वर्षों के अथक प्रयासों के फलस्वरूप 'महर्षि दयानन्द ऐंग्लो वैदिक पब्लिक स्कूल, मेरठ' विकसित होकर एक भव्य रूप में खड़ा हो गया है। गत दो तीन वर्षों में उक्त विद्यालय में जाता रहा हूँ और भव्य यज्ञवेदी पर स्कूल के बच्चों, प्रधानाचार्या व शिक्षिकाओं द्वारा आयोजित यज्ञ में सम्मिलित होता रहा हूँ। २ सितम्बर २०१८ को मेरठ के सभी आर्य समाजों व केन्द्रीय समिति के पदाधिकारी डी.ए.वी.स्कूल के प्रांगण में पधारे थे- वहाँ बच्चों के उत्साहवर्द्धन हेतु मैंने भी एक पुराना भजन गाया था व बच्चों को आशीर्वाद दिया था।

-पाल प्रवीण
एम.एस.120, सेक्टर-डी, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ

***

धधकते पृष्ठ काव्य पर सम्पादकीय

'ब्रज कुमुदेश' लखनऊ से प्रकाशित उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सरस्वती सम्मान से सम्मानित त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका है। नियमित प्रकाशन तथा अपना उच्च साहित्यिक स्तर बनाये रखने में समर्थ वर्तमान समय में लखनऊ की प्रमुख पत्रिका के रूप में इसकी गणना होती है। पत्रिका ने जुलाई-सितम्बर २०१८ अंक में 'अनुपम कृति है धधकते पृष्ठ' शीर्षक से सम्पादकीय प्रकाशित किया है। पत्रिका के सम्पादक श्री अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार हैं; जो हिन्दी की आचार्य परम्परा की स्वर्णिम कड़ी हैं। यों तो प्रत्येक पत्रिका में सम्पादकीय लिखे जाते हैं और 'ब्रज कुमुदेश' के प्रत्येक अंक में भी सम्पादकीय रहता ही है किन्तु 'धधकते पृष्ठ' पर जो सम्पादकीय लिखा गया है; वह काव्य की अन्तरात्मा के उद्घाटन का सफल उपक्रम है। मेरे काव्य को मुझसे अधिक पहचानने वाले लेखक श्री अशोक जी को मैं सादर नमन करता हूँ और श्रेष्ठ उपक्रम हेतु साधुवाद देता हूँ। मुझे यहाँ सुकवि बिहारी लाल जी का एक दोहा स्मरण आ रहा है- जो एक लेखक पर सटीक बैठता है-

तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग।
अनबूड़े बूड़े, तरे जो बूड़े सब अंग।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

***

धारावाहिक-(87)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

१४-काम का ढंग जानना चाहिये

अमेरिका के प्रख्यात लेखक और विचारक एमर्सन के पिता भी अध्ययन शील साहित्यिक थे। एक दिन रात को बाप-पूत साहित्य-रचना में मग्न थे, इतने में उनका बछड़ा गोशाले से रस्सी तुड़ाकर बाहर निकल गया। दोनों उसके पकड़ कर अन्दर ले जाने लगे, परन्तु वह ऐसा अड़ गया कि एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा। आगे से बेटा उसके दोनों कान पकड़ कर खींचता था और पीछे से बाप ढकेलता था। साहित्यिकों के लिये उसे लेजाकर बांधना एक कठिन समस्या थी। उसी समय बाहर से घर की दासी आई। उसने दोनों को झंझट से छुटकारा देकर उस बछड़े को थपथपाया और आसानी से लेजाकर बांध दिया। एमर्सन को विश्वास हो गया कि कोई भी काम, वह चाहे छोटा हो या बड़ा, उसके करने का एक ढंग होता है और वही आदमी अपने कार्य को सुचारु रूप से कर सकता है जो उसके करने का ठीक उपाय जानता हो। उसने अपने संस्मरण में लिखा है कि अब मैं ऐसे ही व्यक्ति को पसन्द करूँगा जो अपने काम का ठीक ढंग जानता हो।

कार्यकुशल ही उपयोगी होता है, कोरा परिश्रमी नहीं। जातक में लिखा है- सीखने योग्य बातों को सीखे; मानने वाले लोग हैं।- 'सिक्खेय सिक्खितब्बानि, सन्ति सच्छन्दिनो जना।'-जातक।

१५-जो है उसी का उपयोग करो

जर्मन सेनापति रोमेल अपने समय का अद्वितीय शूरमा था। उसकी योग्यता-शूरवीरता, रणदक्षता का लोहा उसके प्रबलतम शत्रु भी मानते थे। गत महायुद्ध में उसने अफ्रीका में अंगरेजों के विरुद्ध सैन्यबल और बुद्धिबल का अच्छा परिचय दिया था।

एक बार ऐसा हुआ कि रेगिस्तान में उसके पास युद्ध-सामग्री समाप्त हो गई। रात में सुसज्जित अंगरेजी सेना ने आक्रमण कर दिया। रोमेल के संगी-साथी घबड़ा गये। उन्होंने कहा-हमारे पास कुछ तोपों तो हैं, परन्तु गोले नहीं हैं। रोमेल ने धैर्यपूर्वक कहा-गोले न सही, धूल तो है- उसी का उपयोग करो; धूल झोंको। उसकी आज्ञा से जर्मन सैनिक तोपों में बालू भर-भर कर बालू के टीलों पर दनादन दागने लगे और जो भी थोड़े-बहुत युद्ध-वाहन थे, कुछ मीलों के घेरे में लगातार चक्कर लगाने लगे। परिणाम यह हुआ कि तोपों की गड़गड़ाहट सुनकर और अपरम्पार धूल उड़ती देखकर अंगरेजों ने समझ लिया कि जर्मनों की विशाल सेना युद्ध के लिए आतुर होकर दौड़ी आ रही है। वे वायुयान से भी वास्तविकता की जाँच नहीं कर सके, क्योंकि सारा आकाश धूल से भरा था। उन्हें मैदान छोड़कर भागना पड़ा। समय-चातुरी और अपने धैर्य से रोमेल ने प्रबल वैरी-दल को परास्त कर दिया।

साधनों की कमी से निराश होकर कर्मोद्योग त्याग देना कायरता है। बुद्धिबल से जो हो सकता है, वह बाह्य बल से नहीं-'उपायन हि यत्कुर्यात्तन्न शक्यं पराक्रमैः।'-पंचतंत्र।

कुछ उपयोगी दृष्टान्त

१-चिन्तामणि आपके पास है

योगवासिष्ठ में एक बड़ा सुन्दर उपाख्यान है। चिन्तामणि की प्रशंसा सुनकर एक मनुष्य उसकी खोज में घर से बाहर निकला। घर के निकट ही उसे एक मूल्यवान् पत्थर पड़ा हुआ मिला। उसने उसको हाथ में लेकर देखा, उसमें चिन्तामणि के सब लक्षण मिलते थे। एक बार तो उस व्यक्ति ने सोचा कि हो न हो यही चिन्तामणि है, लेकिन फिर निश्चय किया कि ऐसी अमूल्य एवं अलभ्य वस्तु ऐसे साधारण स्थान में इतनी आसानी से नहीं मिल सकती। उसने उसे काँच का मामूली टुकड़ा समझकर लापरवाही से फेंक दिया। इसके बाद वह चिन्तामणि की खोज में आगे बढ़ा। उसने संसार का एक-एक कोना छान डाला, अनके दुर्गम स्थानों में जा-जा कर उस दिव्य रत्न को खोजा, परन्तु उसे एक भी वैसा पत्थर नहीं मिला जैसा कि अपने घर के निकट मिल चुका था। वर्षों की दौड़-धूप के बाद उस मनुष्य को विश्वास हो गया कि जो वस्तु उसे उसके घर के समीप मिली थी, वही चिन्तामणि थी। सचमुच वही चिन्तामणि थी। उसे पुनः प्राप्त करने की इच्छा से वह अभागा शीघ्रता के साथ घर की ओर लौटा और निश्चित स्थान पर पहुँचकर इधर-उधर, उस असावधानी से फेंकी हुई वस्तु को ढूंढने लगा। इस समय तक वह दुर्लभ हो चुकी थी। मूर्ख सिर पीट-पीटकर पछताने लगा, अपने कर्मों को दोष देने लगा। और करता ही क्या! हाथ में आई हुई सम्पदा को गँवाने का दुःख कम नहीं होता।

इस कथा के मर्म को ग्रहण कीजिए। मर्म की बात यह है कि अनेक अमूल्य और दुर्लभ वस्तुएँ, जिन्हें आप प्राप्त करना चाहते हैं, आपके पास ही मिल सकती हैं; उनके लिये दूर जाने की-इधर-उधर भटकने की आवश्यकता नहीं है। थोड़ी देर के लिये सोचिये कि आप क्या-क्या चाहते हैं। हम आपको बताते हैं-आप जीवन चाहते हैं। अपना जीवन आपको अपने पास ही मिलेगा, किसी दूसरे के पास नहीं। आप सुख और शान्ति चाहते हैं। इन्हें आपने हृदय-सदन में ढूँढिये। आप शक्ति चाहते हैं। वह बन्दूक-पिस्तौल में नहीं, आपके शरीर में ही मिल सकती है। आप मान-प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य चाहते हैं, सिद्धि और सद्गति चाहते हैं। इन्हें अपने कर्मों में खोजिये। आप ज्ञान चाहते हैं। सच्चा ज्ञान आपको तारों-सितारों में नहीं, अपने अन्तर्जगत् में मिलता है। आप सम्भवतः भगवान् को चाहते हैं। हमने सुना है कि संसार में अन्यत्र नहीं, आपके अन्तःकरण में ही वह आपको मिल सकता है। भगवान् ईसा ने सत्य ही कहा हे कि स्वर्ग का राज्य तुम्हारे भीतर है।

आप और क्या चाहते हैं? अवश्य ही, आप प्रेम चाहते होंगे। आप स्वयं सोचिये कि जिस प्रकार का सच्चा प्रेम आप चाहते हैं, वह आपको कहाँ और किससे मिल सकता है? जो प्रेम आपको अपने घर में मिल सकता है, वह सारे संसार में नहीं मिल सकता। संसार की सारी स्त्रियों से भीख मांगकर या खरीद कर आप वह प्रेम नहीं पा सकते जो अपनी शीलवती पत्नी से सहज में ही पा जाते हैं। माता-पिता तथा अन्य स्वजनों का सहज स्नेह आपको कहाँ मिलता हे? जिस सहानुभूति के लिये आप लालायित रहते हैं, अव आपके निकटस्थ व्यक्तियों में ही मिलती है।

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला-3

ईश्वर-पूजा का वैदिक स्वरूप

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

तो आप और मैं दोनों भगवान् की आवश्यकता को मालूम करें जिससे हम उनकी सेवा कर सकें। आज तक कोई आदमी पता नहीं चला सका है कि यह वस्तु ईश्वर की आवश्यकता में सम्मिलित है। पानी वह हमें देता है, भोजन वह हमें देता है, जीवन के बनाये रखने की सारी सामग्री वह हमें देता है, जिसका भण्डार अपूर्व है वह हम से क्या चाहेगा?

मुसलमानों से हमने पूछा तो उन्होंने कुर्आन की एक आयत पढ़ दी-

या शशक्तुलिजन्ना वल् इसा इल्लालियाबुदून। माउरीदु मिन्हुम् मिर्रिज्किव्व उरीदु मुत्वममून।।

हमें न किसी भोजन की जरूरत है, न खाने की। यदि किसी चीज की जरूरत है तो वह यह है कि 'हमारी पूजा करो'।

किसी ने भी खुदा की आवश्यकता को नहीं बताया। जब किसी को भी खुदा की आवश्यकता का पता नहीं है तो बताइये कि अब क्या किया जाए? भगवान् की पूजा कैसे की जाए?

आवश्यकता किसे कहते हैं, जरा यह समझ लीजिये। जिसके बिना आवश्यकता वाले को हानि पहुँच जाये। जिसे मैं कहूं कि यदि मुझे हवा न मिले, जो मेरी जरूरत में दाखिल है, तो मुझे हानि पहुंच जायग। पानी अगर मुझे न मिले तो हानि होगी, रात को जितना आराम मिलना चाहिए यदि मुझे न मिले तो मुझे परेशानी होगी। क्यों नुकसान होगा क्योंकि यह मेरी आवश्यकता में शामिल है। भगवान् के लिए ऐसी कौन-सी चीज है जिसके बिना उसे हानि हो जाएगी? बुद्धिमानों ने कभी यह बात सोची है? जब इतने विस्तार से बात का वर्णन किया तो बात स्पष्ट हुई और यह समझ में आ गया कि भगवान् को तो किसी चीज की आवश्यकता है ही नहीं। जिसे किसी वस्तु की आवश्यकता ही नहीं उसकी सेवा कैसे की जाए, जो जरूरत से रहित हो उसकी सेवा कैसे की जाए? हमें तो कुछ देकर सेवा करने की आदत पड़ी हुई है। ये बहिनें और बेटियां बैठी हैं। क्या कहना इनका? इनका गुण यह है कि सब को खिलाकर खाती हैं। यदि कोई असमय पर भी आ जाये तो अपना खाना भी उसे दे देती हैं और स्वयं भूखी सो जायेंगी। लेकिन यह भी तो उन की सेवा करती हैं जिनकी कुछ आवश्यकता है। लेकिन यदि कोई ऐसा मनुष्य आ जाये जिसकी कोई आवश्यकता ही न हो उसकी सेवा कैसे कर सकेंगी?

मेरे पास एक पुस्तक थी जिसका नाम था 'The Age of Reason' (दी एज आफ रीजन) Thomas Pane (टॉमस पेन) ने उसे लिखा था। अंग्रेजी में लिखी हुई पुस्तक है। उसने इस सम्बन्ध में बड़ा अच्छा लिखा है, 'We cannot serve God in the manner we serve those who cannot do without such service' (वी कैननाट सर्व गाड इन दी मैनर वीं सर्व दोज हू कैननाट डू विदआउट सच सर्विस) हम खुदा के सेवा उस तरह नहीं कर सकते जिस तरह हम उनकी करते हैं जो सेवा के बिना अपना गुजारा नहीं कर सकते। इसलिए जिस प्रकार हमारी सेवा होती है इस तरह खुदा की खिदमत नहीं की जा सकती क्योंकि उसकी कोई जरूरत नहीं है। कितना अच्छा लिखा है टॉमस पेन ने!

पूजा करने वालों ने यह बात समझ ली कि ईश्वर की सेवा कुछ देकर नहीं की जा सकती और उन्हें ये ही ढंग आता था तो वे पण्डितों और पाधाओं से पूछने लगे कि वे कुछ बताएं। किन्तु शोक कि पण्डित और विद्वान् आलस्य, प्रमाद, अज्ञान और स्वार्थ के कारण लोगों को सन्मार्ग न बता सके। जब न बता सके तो लोगों को तो पूजा करनी थी। इन्होंने अपने भगवान् बना लिये। जैसे आर्य लोगों को आर्यसमाज स्थापित करने की आदत है ऐसे ही इन्हें भी पूजा करने की आदत पड़ी थी, इसलिए इन्होंने अपना रास्ता निकाल लिया।

इन्होंने अपनी-अपनी इच्छा और क्षमता के अनुसार अपने-अपने ईश्वर बना लिये। किसी ने लकड़ी के बनाए, किसी ने पत्थर के। जिसे पास सोना था उसने सोने के बना लिये, जिनके पास चांदी थी उसने चांदी के बनाए। जो भी वस्तु जिसके पास थी उसी के उन्होंने ईश्वर बबना लिये और फिर उन्हें खिलाना पिलाना शुरू किया, परन्तु वे खाते नहीं। अब आश्चर्य में खड़े हैं कि हमने इन्हें खिलाने-पिलाने के लिए बनाया था परन्तु वे खाते नहीं। कोई हम जैसा आदमी देख रहा था, आकर उसने पूछा-कि अन्दर क्यों खड़े हो? क्यों चकित खड़े हो? कहने लगे-'साहब हमने इनकी सेवा करने के लिए इनको बनाया था। अब इन को खिलाते-पिलाते हैं तो यह खाते ही नहीं हैं।' वे सज्जन बोले-'जरा सोचिए, विचार कीजिए। आपने इनको किनकी जगह बनाया है, किनके स्थान पर नियत किया है?' उन लोगों ने उत्तर दिया-'भगवान् के स्थान पर।' प्रश्न किया गया, 'क्या, भगवान् खाते हैं?' उत्तर मिला, 'नहीं, भगवान् तो खाते नहीं हैं।' तो उस व्यक्ति ने कहा कि जब भगवान् खाते नहीं हैं और आपने इन्हें भगवान् की जगह नियत किया है और खाते नहीं हैं तो वे इतने बेशर्म तो हैं नहीं कि भगवान् जो खाता नहीं है उसकी जगह नियत होकर खुद खाने लगें। कैसे खा लें? 'They are working instead.' (दे आर वर्किंग इनस्टैड)। उन्होंने कहा, हम भी नहीं खायेंगे। इतना स्वाभिमान तो हम में है। इनको समझाना पड़ा।

बुद्धिवादियों ने इन्हें समझाया कि आपने सारा काम उल्टा कर दिया। जिसने सारे जगत् को बनाया उसे तुमने बना दिया। सारा काम उल्टा हो गया। जिस बाप ने हमें बनाया था हमने उसे बना दिया। जो सर्वत्र था वह एकत्र हो गया, जो असीम था वह ससीम हो गया। जो स्वतंत्र था वह बन्दी हो गया, बन्धन में आ गया। आप पूछेंगे-'बन्धन में कैसे आ गए?'

आप देखते हैं कि बड़े-बड़े सेठों ने मन्दिर बनवा रखे हैं या उनके बड़े-बड़े मकान हैं। उनमें एक कोने में उन्होंने मन्दिर बनवा दिया है। उन मन्दिरों में देवता रखे हुए हैं, अर्थात् परमात्मा सर्वत्र था। अब एक-एक मकान में बन्दी हो गया। मकान के अन्दर रहता है तो उसका मकान छोटा ही होगा। तो वह सर्वत्र था अब एकत्र हो गया। वह मकान जिसमें स्वयं रहते हैं बड़ा अच्छा है, बहुत ऊँचा है। उसमें सभी प्रकार के सुख हैं। भगवान् जी के लिए सेठ ने इतना छोटा मकान बनवाया है कि पुजारी जी भली प्रकार खड़े भी नहीं हो सकते

हैं, झुके-झुके ही अपने कार्य कर देते हैं। अगर कोई आकर पूछे कि यह किसका मन्दिर है? 'To whom this temple belongs?' तो कहा जायगा कि यह मन्दिर सेठ जी का है। और यह देवता? यह भी उन्हीं के हैं-तो जो स्वामी था, सबका स्वामी था, अब हम उसके स्वामी हो गए। काम उल्टा हो गया न? मन्दिर भी सेठ जी का और जो उसमें भगवान् हैं वह भी सेठ जी के। अब सेठ जी अपने भगवान् की पूजा भी करते हैं और उसकी रक्षा भी करते हैं। शाम को हमेशा ताला लगा देते हैं, कभी कोई उठाकर न ले जाए-जो सारे जगत् का रक्षक था अब हम उसके रक्षक बन गए। मैंने यह बस बातें इसलिए कही हैं कि एक सही नक्शा आपके सामने आ जाये। अब पुजारी व सेठजी की मर्जी प्रधान है, जब चाहे मन्दिर खोलें, जब चाहे बन्द कर दें, खाना चाहे एक दिन में एक बार खिलाएं चाहे चार बार। भगवान् अब कोई शिकायत नहीं कर सकते क्योंकि सेठ जी की रिआया या प्रजा में शामिल हो गए हैं। वह मालिक के सामने कैसे बोले? हमारी नासमझी से काम करने पर कितने काम बिगड़ गए?

मैं दिल्ली मे बाबू सुन्दरलाल जी अहलूवालिया के घर में किराये पर रहा करता था। उनका एक मन्दिर भी था। उसमें जो पुजारी जी थे वे मेरे मित्र थे और पास ही रहा करते थे। आप जानते हैं, मित्रों में हंसी की बात हुआ करती है, हमारी भी होती थी तो वह कह दिया करते थे कि हां, आप कह लीजिए। हम सनातनधर्मी हैं और आप आर्यसमाजी हैं। मैंने उनसे एक बार कहा कि आप ईमानदारी से बताइए कि क्या यह ठीक ढंग है? वह कहने लगे, 'पण्डित जी, ठीक विधि क्या है? यह तो आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूँ, कोई अन्दर की बात नहीं है।'

एक दिन शाम को वह अपने बेटे ऋषि को आवाज लगाकर पूछ रहे थे कि रात होने वाली है, तूने मन्दिर का दरवाजा बन्द किया कि नहीं? उससे नकारात्मक उत्तर सुनकर जरा वे नाराज हुए और बोले-तूने अभी तक दरवाजे बन्द नहीं किए, यदि कोई ठाकुरजी को उठाकर ले जाये तो आज तक कभी वापस आये हैं? मैंने जरा हंसी कर दी मैंने कहा-'कभी आपने इनको गली-कूचे में घूमने का मौका दिया है? गली-कूचे में घूमने वाले को अपने घर का पता ज्ञात रहता है। ठाकुर जी बिचारों को क्या पता? वे तो आप तक कभी बाहर गए ही नहीं। तो उन्हें अपने घर के रास्ते का कैसे पता चले? इसलिए एक बार जाने के बाद वे आज तक लौटे नहीं।' हंसने लगे। हंसते-हंसते कहने लगे-'पण्डित जी! खैर और बातें तो छोड़िए जन्माष्टमी आने वाली है। जरा लाला जी से कह दीजिए कि ठाकुर जी के कपड़े बनवा दें। मैं कहता हूं तो नाराज होने लगते हैं। आप उधर से जब निकलें तो कह दीजिए। पड़ोसी का इतना तो लिहाज होना चाहिए।'

(क्रमशः)

काव्यायन

अटल : हिन्दू मन हिन्दी तन

❑डॉ. कैलाश निगम

जननेता, देशभक्ति के थे उन्नायक,
प्रखर प्रवक्ता भरा ज्ञान का भण्डार था।

देश के प्रधान मंत्री मित्र थे सभी के वह,
किया देश भक्ति का सदैव ही प्रचार था।

सत्ता में रहे वो या विपक्ष में रहे परन्तु,
निर्विवाद कार्य किया सौम्य व्यवहार था।

अटल बिहारी मातु भारती के थे सपूत,
हिन्दू मन, हिन्दी तन, किया साकार था।।

–4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

वरेण्य जीवन

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

वाष्प सम अविराम, क्षीयमाण जिन्दगी ये,
ताप-शक्ति-संयुत चलायमान जिन्दगी।
श्रेय-प्रेयमयी वही, रहे जो सुकर्म-रत,
बन्दे सभी एक ही के, माने, करे बन्दगी।
दे सके जो आम जिन्दगानियों को जिन्दगानी,
जाति-सम्प्रदाय भूल, हिंसक दरिंदगी।
समता-सहिष्णुता के, करुणा के प्लावन से,
सींचे म्रियमाणों को, वरेण्य वही जिन्दगी।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर, प्रथम, सीतापुर रोड, लखनऊ

प्रकृति-परिवेश

❑डॉ.अशोक कुमार गुप्त 'अशोक'

वृक्षों की है अद्भुत माया।
पाते जन, पशु-पक्षी छाया।

पलते इनसे जगत जीव हैं।
लगते यह सुन्दर सजीव हैं।

प्राण दायिनी वायु प्रदाता।
प्रमुदित मन, जनगण गुण गाता।

वृक्षों से मिलते फल पत्ते।
जीव सुखी हों हरदम हँसते।

पर्यावरण शुद्ध यह रखते।
पीर जगत की यह हैं हरते।

ईंधन-भोजन के ये दाता।
जन-जन के हैं भाग्य विधाता।

–124/15, संजय गाँधी नगर, नौबस्ता, कानपुर–21

बाल-दिवस

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

चाचा नेहरू जवाहर लाल।
हम बच्चों को प्यारा नाम।।

गाँधी जी के अनुयायी बन,
स्वतंत्रता संघर्ष किया।
सही यातनाएँ जेलों में,
देशभक्ति आदर्श दिया।
अमर तुम्हारा त्याग ललाम।।

आधुनिक भारत-निर्माता के,
लिखा ग्रंथ 'भारत-एक खोज'
प्रथम प्रधानमंत्री भारत के,
बनकर भरा राष्ट्र में ओज।
नारा दिया-'आराम हराम'।।

चौदह नवम्बर जन्म दिवस,
है 'बाल-दिवस' कितना न्यारा
शांति-एकता लाने में ही,
लगा दिया जीवन सारा।
फूल गुलाब लगे अभिराम।।
चाचा नेहरू तुम्हें प्रणाम।।

–117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ–22

गीतिका

❑ओम अभिनव 'वात्सल्य'

विश्व को मानें हम परिवार।
किन्तु वह मान रहे बाजार।

सुखी हों सभी हमारा भाव,
स्वार्थ उनका जीवन आधार।

विश्व में भाँति-भाँति के लोग,
भिन्न है उनकी सोच विचार।

सिखाते वेद प्रीति की रीति,
घृणा का करते नहीं प्रचार।

साधनों बिना भेदते लक्ष्य,
साधना मे वह शक्ति अपार।

छोड़ छल, द्वेष, दम्भ, पाखण्ड,
परस्पर करें प्रेम-व्यवहार।।

–आदर्श पुरम, त्रिवेणी नगर, लखनऊ–20

हम न भूलेंगे तुझे

❑आज़ाद कानपुरी

हमसे हो जायें खफा लाख ज़माने वाले।
हम न भूलेंगे तुझे राह दिखाने वाले।

वक्त के साथ ये रिश्ते भी बदल जाते हैं।
लोग मिलते हैं कहाँ साथ निभाने वाले।

मेरा ईमान, मेरा प्यार, मेरी दौलत है।
तू न समझेगा, न समझे हैं ज़माने वाले।

तू समन्दर है, सागर भी है और बादल भी।
हो भला तेरा, मेरी प्यास बुझाने वाले।

तुझको मालूम नहीं क्या है ज़माने का चलन।
खुद न लुट जाना मुझे छोड़ के जाने वाले।

–ग्राम व पोस्ट–कुकहट, जिला कानपुर

हर्ष–चतुष्पदी

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

प्रार्थना - निरभिमानता की पहचान है,
अपेक्षित से साहाय्य निजता की शान है।
स्तुति से प्रीति, गुणकर्म में आता सुधार है,
उपासना से परब्रह्म से होता साक्षात्कार है।

आप ही गुरु आप ही चेला-
संशय निवृत्ति कैसे हो?
बिना तर्क मान लेने से-
सत्य में प्रवृत्ति कैसे हो?

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

अटल जी की अमर रचना

चलते समय

इस कविता में स्वतत्रता सग्राम में शहीद होने वाले नौजवान का चित्रण है। उसे यह तो भरोसा था कि उसकी माँ उसे मातृभूमि पर हंसते–हसते बलि चढ जाने की अनुमति देगी, किंतु मन में भय था कि कहीं बलिदान के समय माँ का स्नेह आँसू बनकर प्रकट न हो जाए। उसे आँसू नहीं, आशीर्वाद चाहिए। इसी भाव को इस कविता में व्यक्त करने का प्रयास कियका गया है। –अटल

आज क्यों आँसू नयन में?
आज क्यों आँसू नयन में??

चिर-मिलन की राह पर,
प्रथम पग है आज मेरा।
है दिवस प्रस्थान का, अब
हो सकेगा चिर-बसेरा।
माँ! सफल बन कर रहेगा
आज ही तो दूध तेरा।
आज ही तो यज्ञ में
आहुति बनेगा लाल तेरा।।

पय नहीं, थी श्वेत ज्वाला
जो पिलाई बालपन में,
धधकती जो आज तन में,
जल रही जो आज मन में,
जगमगाती जो भुवन में,

राख करके ही रहेगी,
खाक करके ही रहेगी,
शीघ्र ही वह शांत होगी मात!
तेरे ही चरण में,
आज क्यों आँसू नयन में?

मृदुल चुंबन थे नहीं वे,
प्यार के लक्षण नहीं वे
लालिमा छाई हुई वह
आग की ही लालिमा थी,
जल गईं सब कालिमा थी।
आज भी तो कालिमा-
धोने हुए तैयार हैं हम,
पास रखते शक्ति इतनी
स्वयं को भी वार दें हम।।

लाल लोहू से धुलेगी,
आँसुओं से क्या पुछेगी?
आज तेरा रक्त तेर ही लिए
जाता बहाने,
आज मुझको मिल सकेगी
शांति तेरे ही शयन में,

आज क्यों आँसू नयन में?
आज क्यों आँसू नयन में??

गोद में लेकर बताया,
बाहुओं में भर पढ़ाया,
अंक में कस कर सिखाया,
मृत्यु को उर से लगाना।

'बाहुओं को कुछ उठाए,
डगमगाते पग बढ़ाए,
चूमने को मुख झुकाए,
शीघ्र ही तुम गोद में फिर
लेट जाना,'
मृत्यु को उर से लगाना।।

आज परिचय प्राप्त करने,
स्वयं को भी व्याप्त करने,
कुछ उंठाए हस्त अपने,
जा रहे हम,
पूर्ण सुख का सफल
अनुभव पा रहे हम,

रोक लो इन आँसुओं को
मार्ग में बाधा न डालें,
क्या तुझे भाता यही फिर
आज हम दुर्बल कहा लें?

कर्ण हैं अतृप्त से ये,
आज प्यासे फिर बने ये,
वीर रस के गान गाकर
प्यास इनकी दो बुझा तुम,
राख से छाए हुए अंगार
फिर से दो जला तुम।।

आग से ही तो जलेंगे,
आँसुओं से जल सकेंगे,
आग भर लो, अश्रु हैं क्यों
आज तो अपने नयन में

आज क्यों आँसू नयन में।
आज क्यों आँसू नयन में।।

(पुनर्नवा 27 मई, 2005 के अंक से–साभार)

अमर अटल-स्मृति जल

❑कौशल कुमार

कल जो था वह आज नहीं है,
आज न होगा कल।
पर कुछ ऐसा होता है जो,
रहता अमर-अटल।

राजनीति की वही हृदय में,
सरल स्वच्छ सरिता।
जिसमें नही नही प्रकटी,
मानवता की कविता।
द्वेष रहित जल रहा प्रवाहित,
आजीवन छल-छल।

सिंहासन आरूढ़ न जाने,
कितने लोग जिये।
आपने समय सभी ने मन के
विविध प्रयोग किये।
कुछ हो गये कलंकित पर कुछ,
रहे धवल निर्मल।

–ग्राम–बहजादका, पोस्ट–पिलौना, जिला–मेरठ (उ.प्र.)

राजस्थान-समाचार

नहीं रहा आधुनिक युग का सर्वमान्य लेखक

धर्मवीर पंड़ित लेखराम के उत्तराधिकारी माने जाने वाले आर्य जगत् के महान् लेखक तथा विद्वान् व्याख्याता डॉ.भवानीलाल भारतीय, नंदनवन, जोधपुर के विगत मास दिवंगत होने का दुःखद समाचार प्राप्त कर स्वाध्यायोन्मुख आर्यजनों को गहरा आघात पहुँचा। डॉ.भारतीय का जन्म राजस्थान राज्य के नागौर जनपदान्तर्गत परबतसर ग्राम में आषाढ़ कृष्णा ३, १९८५वि. को हुआ था। संस्कृत एवं हिन्दी से एम.ए. के बाद राजस्थान विश्वविद्यालय से आपने १९६८ ई. में पी-एच.डी. की उपाधि ग्रहण की।

स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज के वैचारिक एवं ऐतिहासिक पक्षों से सम्बन्धित उनके अनेक शोधपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान्, परोपकारिणी सभा का इतिहास तथा आर्य समाज के पत्र और पत्रकार इसी श्रेणी की कृतियाँ हैं। 'आर्य समाज : अतीत की उपलब्धियाँ और भविष्य के प्रश्न' ग्रन्थ लिखकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से १९७६ ई. में पं.लेखराम साहित्य पुरस्कार प्राप्त किया। आपके द्वारा रचित 'महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द' एवं 'श्रीकृष्ण चरित' पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से पुरस्कृत हो चुके हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय द्वारा १९८२ ई. में पं.गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से भी आप सम्मानित हो चुके हैं। दो दशाब्द से भी अधिक समय तक राजस्थान की कालेज शिक्षा सेवा से सम्बन्धित रहने के पश्चात् वे पंजाब विश्वविद्याल की दयानन्द अनुसंधान पीठ के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पर पर कार्यरत रहे।

'नवजागरण के पुरोधा : स्वामी दयानन्द' आपका सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आर्य संस्कार से युक्त परिवारों के निर्माण का प्रक्रम है आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन -वाचोनिधि आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर स्वर्ण जयन्ती पार्क रोहिणी स्थित महासम्मेलन परिसर में २१वां आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। दिल्ली से कोटा लौटने पर परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि २६ अक्टूबर को महासम्मेलन स्थल में निर्मित महर्षि दयानन्द नगर के सभागार-६ में उच्च शिक्षित एवं उच्च आर्य वर्ग के युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में बड़ी संख्या में आर्य युवक-युवतियों ने आत्मविश्वास के साथ अपना परिचय मंच पर आकर प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन अतिथियों श्रीमती विभा आर्य राष्ट्रीय संयोजिका, श्री सतीश चड्ढा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, एस.पी.सिंह संयोजक दिल्ली प्रान्त, आर.सी.आर्य सहसंयोजक परिचय सम्मेलन, हर्षप्रिय आर्य वेदमित्र वैदिक, श्रीमती वीणा आर्य, नरदेव आर्य रावतभाटा, लालचन्द नागर बांरा एवं पं. श्योराज वशिष्ठ ने वेदमंत्रों के उच्चारण पूर्वक किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि वाचोनिधि आर्य ने अपने उद्बोधन में कहा कि वैवाहिक परिचय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य आर्य संस्कारों से युक्त परिवारों का निर्माण करना है। जब पति और पत्नी दोनों आर्य मान्यताओं के अनुरूप जीवन जीने वाले होते हैं तो सन्तान भी अल्प प्रयासों से संस्कारवान बन जाती है। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा ने अपने सम्बोधन में कहा कि अल्प समय में ही २१वें परिचय सम्मेलन तक पहुंचना बड़े गर्व की बात है। इसके पीछे महर्षि देव दयानन्द के विचारों के प्रति निष्ठा ही प्रमुख कारण है। निश्चित रूप से इस सम्मेलन से उच्च शिक्षित युवक-युवतियों को अपने अनुकूल जीवन साथी के चयन में सहजता होगी। सम्मेलन का संचालन श्रीमती विभा आर्य एवं श्री हर्ष प्रिय आर्य ने किया। उपस्थित युवक-युवतियों ने आत्मविश्वास के साथ परिचय दिया। कुछ अभिभावकों ने अपने पुत्र-पुत्रियों का बायोडाटा मंच पर आकर सबके सामने बताया। इस अवसर पर युवक-युवतियों के फोटोयुक्त बायोडाटा की विवरणिका का प्रकाशन किया गया जो सभी को निःशुल्क वितरित किया गया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

शरदीय नवसस्येष्टि पूर्वक आर्य समाज कोटा ने मनाया महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस

कोटा, ११ नवम्बर। दीपावली के महापर्व के अवसर पर कोटा की समस्त आर्य समाजों द्वारा गायत्री विहार में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस मनाया गया। गायत्री विहार स्थित ब्राइटलैण्ड स्कूल परिसर में इस अवसर पर सर्वप्रथम आचार्य अग्निमित्र शास्त्री के पौरोहित्य में वैदिक पद्धति से शारदीय नवसस्येष्टि यज्ञ किया गया जिसमें उपस्थित जनों ने खील-बताशे की विशेष सामग्री से समृद्धि एवं श्री की कामना के साथ वेदमंत्रोच्चार पूर्वक आहुति दी। तत्पश्चात मुख्य समारोह आयोजित किया गया जिसमे महर्षि दयानन्द एवं उनके जीवन दर्शन की चर्चा की गई। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि सभी को संगठन के प्रति निष्ठा रखते हुए मिलजुलकर महर्षि दयानन्द के कार्यों को आमजन तक पहुंचाना चाहिए।

इस अवसर पर सुशीला कुर्मी, कृष्णा भटनागर, विभूति वासुदेव एवं भैरोलाल आर्य ने ऋषि महिमा के भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज गायत्री विहार के मंत्री उमेश कुर्मी ने किया। *(अरविन्द पाण्डेय, प्रधान)*

हरदोई-समाचार

आर्य समाज सण्डीला का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सण्डीला, जनपद हरदोई का वार्षिक उत्सव २८ से ३० नवम्बर २०१८ को मनाया जा रहा है, जिसमें प्रख्यात वैदिक विद्वान् डॉ.शिवदत्त पांडेय वेदोपदेशक तथा भजनोपदेशक श्री संजीव रूप पधार रहे हैं। डॉ.सत्यप्रकाश जी सूचित करते हैं कि २९.११.१८ को अपराह्न ३ बजे महिला सम्मेलन होगा जिसमें वेदों पर शोधकार्य करने वाली विदुषी डॉ.मधूलिका श्रीवास्तव, जो लखीमपुर कालेज में प्राध्यापिका हैं, विशेष रूप में पधार रही हैं। ज्ञातव्य है मधूलिका जी को उ.प्र.के राज्यपाल द्वारा वैदिक साहित्य पर विशेष अनुसंधान हेतु सम्मानित किया जा चुका है।

सीतापुर-समाचार

डॉ.सुनील कुमार सारस्वत सम्मानित

राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास एवं भगीरथ सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में २६वाँ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, भगीरथ पब्लिक स्कूल के सभागार राजनगर, गाजियाबाद में आयोजित हुआ। महात्मा गांधी की १५०वीं जयन्ती वर्ष को समर्पित इस द्विदिवसीय आयोजन में देश भर के विभिन्न प्रान्तों से आये साहित्यकारों ने 'गांधी, हिन्दी और पत्रकारिता' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर विभिन्न सम्मानों के क्रम में 'मानस चंदन' के सम्पादक डॉ.सुनील कुमार सारस्वत को 'गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान-२०१८' से पद्मश्री डॉ.श्याम सिंह 'शशि' द्वारा प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, उत्तरीय तथा पांच हजार रुपये मूल्य की पुस्तकें देकर अलंकृत किया।

डॉ.सुनील कुमार सारस्वत, 'मानस चंदन' के पूर्व सम्पादक डॉ.गणेशदत्त सारस्वत की कनिष्ठ पुत्र हैं, जिन्हें इस उपलब्धि पर हिन्दी सभा सीतापुर के पदाधिकारियों, सदस्यों, कवियों तथा शिक्षकों व अधिवक्ताओं ने बधाई दी।

लखनऊ-समाचार

क्रांतिवीरों को श्रद्धांजलि

१६.११.१८। इतिहास प्रसिद्ध गदर पार्टी के सात जाँबाज क्रांतिवीरों- करतार सिंह सरावा, विष्णुगणेश पिंगले, हरनाम सिंह स्यालकोटी, बख्शीश सिंह, जगत सिंह, सुरैन सिंह बड़े, सुरैन सिंह छोटे के बलिदान की पावन स्मृति में क्रांतिवीर श्री रामकृष्ण खत्री के कैसरबाग स्थित आवास पर सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता थे प्रो.अशोक कुमार कालिया, पूर्व कुलपति सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी। सभा की अध्यक्षता श्रीमती मालविका मुखर्जी ने की। संयोजक श्री उदय खत्री ने गदर पार्टी के इतिहास तथा बलिदान के पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला।

श्री पाल प्रवीण ने सभा को सूचित किया कि दो वर्षों से यह निर्णय लिया गया था कि क्रांतिवीरों की स्मृति में प्रति वर्ष अपने अपने घरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर गोष्ठियाँ आयोजित की जानी चाहिए। उक्त निर्णय को मूर्तरूप देते हुए २३ सितम्बर को आर्य समाज अलीगंज (महावीरगंज) में एक गोष्ठी शहीदे आजम भगत सिंह की स्मृति में आयोजित की गई थी, जिसके मुख्य वक्ता श्री उदय खत्री थे।

लखनऊ-समाचार

जलेश्वर मुनि : एक तपस्वी आर्यजीवन का पूर्ण विराम

आर्य समाज के अद्वितीय, तपस्वी भजनोपदेशक महात्मा जलेश्वर मुनि (९४) का निधन गत १६.१०.१८ को किदवई नगर, कानपुर में हो गया। आपकी स्मृति में आर्य समाज अलीगंज (महावीरगंज) में २४.१०.१८ को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक वक्ताओं ने आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रारंभ से ही मुनिवर 'आर्य लोक वार्ता' से जुड़े रहे और अपना आशीर्वाद-सहयोग नियमित देते रहे। श्री पाल प्रवीण के संयोजन में आपका कुछ दिन पूर्व भावभीना अभिनन्दन किया गया था तथा आचार्य विद्यासागर फाउण्डेशन के तत्वावधान में एक सुन्दर स्मारिका प्रकाशित की गई थी। यहाँ प्रस्तुत है महात्मा जी का संक्षिप्त परिचय- उन्हीं की दौहित्री डॉ.(श्रीमती)आचार्या निष्ठा विद्यालंकार के शब्दों में-

श्री जलेश्वर मुनि जी महाराज का जन्म रायबरेली जनपद स्थित ऊँचाहार के निकट बिकई ग्राम में एक प्रतिष्ठित क्षत्रिय परिवार में सन् १९२४ में हुआ। आपके पिता का नाम श्री सन्तबख्श सिंह तथा माता का नाम श्रीमती महादेवी था। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपका विवाह एक सुन्दर, सुशील तथा विनम्रता और वीरता की जीती जागती मशाल श्रीमती सम्पत्ति देवी जी के साथ सम्पन्न हुआ। विवाहोपरान्त परिवार को गतिशीलता प्रदान करने हेतु आप कानपुर के किदवई नगर में आकर बसे और स्वदेशी कॉटन मिल में आप सेवारत हो गये। आपकी तीन सन्तानें हैं- एक पुत्र तथा दो पुत्रियाँ। पहली पुत्री श्रीमती इन्द्रा देवी जिनका विवाह दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार हरियाणा के स्नातक, महर्षि दयानंद विद्यापीठ के संस्थापक व संचालक तथा आर्य जगत के महोपदेशक आचार्य जयराम सिंह त्यागी के साथ कानपुर नगर स्थित ग्राम दूल में हुआ जिनकी पुत्री डा.निष्ठा विद्यालंकार इस समय आर्य जगत की सुप्रसिद्ध विदुषी हैं और एक संस्कृति महा विद्यालय लखनऊ में प्रवक्ता भी हैं।

दूसरी संतान के रूप में आपके इकलौते पुत्र श्री विजय प्रकाश सिंह आर्य 'एकश्चन्द्रः तमो हन्ति' के समान अकेले ही पूरे परिवार के अन्धकार को नष्ट करने में सक्षम हैं। तीसरी और अंतिम सन्तान के रूप में आपकी दूसरी पुत्री श्रीमती अरुणा सिंह जो बाल्यकाल से ही अत्यंत मेधावी थीं एक सरकारी शैक्षणिक संस्था में प्राचार्या पद पर कार्यरत हैं। सन् १९४५ में श्री जलेश्वर जी का विवाह हुआ था और १९६६ में आपकी देवी जी को मामूली उदरशूल हुआ और उनका निधन हो गया। उस समय आपकी आयु मात्र ४२ वर्ष की थी। सन् १९८८ में आप एक लंम्बे कार्यकाल के उपरान्त अपनी सेवा से अवकाशप्राप्त हुए और अद्यावधि पर्यन्त आप ईश्वर चिन्तन और अध्यात्म में मगन रहे तथा वैदिक धर्म का प्रचार कार्य करते रहे।

शोक समाचार

श्री वीरेन्द्र स्वामी सरस्वती (पूर्व नाम डॉ.वीरेन्द्र बहादुर सिंह) के कनिष्ठ पुत्र श्री लोकेश के असामयिक निधन पर शान्तियज्ञ श्री विश्वव्रत के आचार्यत्व में समपन्न हुआ; जिसमें श्री नवीन सहगल, श्री प्रेममुनि, श्री गणेश जी, श्री पाल प्रवीण, अभिषेक, देवेन्द्र चौधरी व अनुपम (सुपुत्र श्री सेवकराम आर्य) ने श्रद्धांजलि स्वरूप यज्ञ में आहुतियाँ अर्पित कीं। स्वामी वीरेन्द्र ने स्व.लोकेश के सद्गुणों पर प्रकाश डाला।

मेहरोत्रा जी दिवंगत

आर्य समाज आदर्श नगर के सक्रिय सदस्य श्री पृथ्वीराज मेहरोत्रा का गत दिनांक १६.१०.१८ को निधन हो गया। वैदिक विधि से आपकी अन्त्येष्टि आर्य समाज द्वारा की गई तथा शोक सभा में शान्तिपाठ के उपरान्त श्रद्धांजलि अर्पित की गई। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत मेहरोत्रा जी की आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा शोक संतप्त पारिवारिक जनों को इस कष्ट को सहन करने की क्षमता प्रदान करे। *(रुद्रस्वरूप, मंत्री)*

सम्मान एवं काव्यगोष्ठी

२८.१०.१८। ज्योतिपर्व के उपलक्ष्य में कविता लोक संस्था की अड़तीसवीं काव्य गोष्ठी संस्था अध्यक्ष ओम नीरव के श्याम विहार कालोनी स्थित आवास पर आयोजित हुई जिसकी अध्यक्षता डा.अजय प्रसून ने की। मुख्य अतिथि अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' को 'कविता लोक भारती' सम्मान से विभूषित किया गया। काव्यगोष्ठी में राहुल द्विवेदी 'स्मित', उमाकांत पाण्डेय, कृष्ण कुमार मिश्र 'अशांत', माधवी मिश्रा, गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', भारती पायल, ओम नीरव, शिवनाथ सिंह ने दीपपर्व को समर्पित सरस काव्य पाठ किया। एकल काव्यपाठ की नूतन परम्परा में सम्मानित कवि अशोक कुमार पाण्डेय ने प्रत्येक कवि के काव्यपाठ के बाद अपने विविधवर्णी उत्कृष्ट छन्दों से रससिक्त किया। गोष्ठी का संचालन ओम नीरव ने किया। *('विनम्र')*

डा.निशंक जन्मशती कार्यक्रम

२१.१०.१८। सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा.लक्ष्मीशंकर मिश्र निशंक की जन्म शताब्दी के अवसर पर उ.प्र.उर्दू अकादमी सभागार में सम्मान एवं संगोष्ठी का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें ख्यातिप्राप्त छन्दकार डा.जगमोहन नाथ 'सरस' को डा. लक्ष्मीशंकर मिश्र साहित्य सम्मान तथा रामकिशोर वाजपेयी, प्रो.रमेश दीक्षित, प्रो. अम्बिका प्रसाद तिवार एवं देवीशंकर द्विवेदी को विशिष्ट सम्मान प्रदान किए गए। इस बीच डा.निशंक अध्ययन संस्थान द्वारा प्रकाशित डा.निशंक के शोध प्रबंध हिन्दी में सवैया साहित्य कृति का विमोचन भी हुआ। सम्मानित साहित्यकारों ने डा.निशंक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपने उद्गार व्यक्त किये। मुख्य अतिथि डा.उदय प्रताप सिंह ने डा.निशंक के साहित्यिक अवदान की सराहना की तथा अपना काव्यपाठ प्रस्तुत किया। कार्यक्रम अध्यक्ष डा.सूर्य प्रसाद दीक्षित ने डा.निशंक की रचनाधर्मिता पर व्यापक प्रकाश डाला तथा सवैया छन्द के सौष्ठव एवं रचना प्रक्रिया पर परिचयात्मक वक्तव्य किया। डा.निशंक के परिवार के सदस्यों अनिल मिश्र तथा मुकुल मिश्र के कुशल संयोजन में समारोह में सुधी साहित्यकारों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। संस्था अध्यक्ष डा.कमलाशंकर त्रिपाठी द्वारा कृतज्ञता ज्ञापित की गयी। *('विनम्र')*

लखनऊ-समाचार

कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य का जन्मदिवस

शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, प्रबंधक मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज तथा डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, अम्बेडकरनगर(उ.प्र.) का ८२वाँ जन्मदिवस सादगी और आध्यात्मिक वातावरण में ६१६, क्रिस्टल अपार्टमेंट, फैजाबाद रोड, लखनऊ में ०६.११.१८ को मनाया गया। आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य एवं पं.दीनानाथ शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया तथा आनन्द बाबू के यशस्वी जीवन की प्रमुख उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। आनन्द बाबू के ज्येष्ठ पुत्र श्री मनीष कुमार आर्य ने सहधर्मिणी श्रीमती श्वेता के साथ यजमान की भूमिका निभायी। श्रीमती गायत्री शास्त्री (पत्नी पं.दीनानाथ शास्त्री), संजय मिश्र एडवोकेट सहित उपस्थित लोगों ने आनन्द जी के दीर्घायुष्य और सुंदर स्वास्थ्य की कामनाएँ व्यक्त कीं। सम्पूर्ण आयोजन को श्री मनीष जी के पुत्र-पुत्री- सार्थक और मान्यता ने बड़ा ही रोचक बना दिया। डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने अपनी शुभकामना को तीन शब्दों में समेटा- प्रोत्साहन, प्रेरणा और प्रतिफलन। आपने कहा- मुझे प्रोत्साहन तो श्रद्धेय मिश्रीलाल आर्य से मिला, प्रेरणा कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य से मिली और प्रतिफलन मैं सार्थक और मान्यता में देख रहा हूँ। परमात्मा प्रिय मनीष कुमार आर्य सहित सम्पूर्ण परिवार को वैभव, समृद्धि आध्यात्मिक शक्ति से संयुक्त रखे-

कर्मयोगी ध्येय जिनका- संतु सुखिनः सर्व है।
जिन्दगी ऐसे जिये- जिसपर वतन को गर्व है।।

आचार्य प्रवर पं.देवदत्त त्रिपाठी की जयन्ती मनाई गई

आचार्य प्रवर पंडित देवदत्त त्रिपाठी, आयुर्वेदाचार्य, निवासी- ग्राम-गोनी, पोस्ट-गोंडवा, जिला-हरदोई की जयन्ती प्रत्येक वर्ष दीपावली के एक दिन पूर्व चतुर्दशी को मानाई जाती है। इस अवसर पर आर्य लोक वार्ता कार्यालय के अतिरिक्त जनरैलगंज- पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी(ज्येष्ठ पुत्र) तथा नेवाजगंज चौक में कवयित्री रामा आर्य 'रमा' (पुत्री) के आवास पर प्रतिवर्ष हवन के साथ पंडित जी के जीवन चरित्र पर चर्चा होती है।

इस वर्ष ०७.११.१८ को १८०-डी, शिवविहार कालोनी, फरीदी नगर में जयंती का आयोजन सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरान्त आचार्य प्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने बताया कि किस प्रकार उनके पिताजी सभी प्रकार की शंकाओं का निवारण करने में समर्थ थे। इस अवसर पर आलोक वीर आर्य, अमित वीर त्रिपाठी, शशि त्रिपाठी, रश्मि त्रिपाठी के अलावा निमिषा वाजपेयी, वेदांश, वेदांजलि तथा मलयज त्रिपाठी इत्यादि पारिवारिक जन मौजूद थे।

प्रेरणा का समावर्तन संस्कार

नगर के लब्ध प्रतिष्ठ एडवोकेट श्री राकेश त्यागी एवं भारतीय विद्या भवन पब्लिक स्कूल गोमती नगर की प्रधानाचार्या श्रीमती मालती त्यागी की सुपुत्री आयुष्मती प्रेरणा का समावर्तन संस्कार दि. १०.११.१८ शनिवार को ३/६८, विराम खण्ड, गोमती नगर में डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने वेदोक्त विधि से सम्पन्न कराया। इस अवसर पर राकेश त्यागी के पिता श्री रमेश चन्द्र त्यागी, माता जी, बन्धु श्री अनिल त्यागी एवं परिवार के सभी प्रमुख सदस्य मौजूद थे। संस्कार के सम्पूर्ण कार्यक्रम का अवलोकन करके परिवार ने गहरे आत्मसंतोष, शान्ति एवं सुख का अनुभव किया।

अनुपम गुणों से युक्त देवतुल्य थे डॉ. शशिरंजन

१५.१०.१८। अलीगंज, सेक्टर-डी में संस्कृत की प्रख्यात विदुषी डॉ.मनोरमा तिवारी (पूर्व प्राचार्या महिला कालेज) के आवास पर लखनऊ विश्वविद्यालय लोक प्रशासन विभाग के सेवानियुक्त प्रोफेसर डॉ.शशिरंजन तिवारी की पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। वैदिक विधान पूर्वक यज्ञ आचार्य डॉ.वेद प्रकाश आर्य (प्रधान सम्पादक आर्य लोक वार्ता) ने श्री पाल प्रवीण जी के सहयोग से सम्पन्न कराया। स्मृतिशेष डॉ.तिवारी जी की स्मृति में आगन्तुक नर नारियों ने आहुतियाँ दीं था बाद में चित्र पर माल्यार्पण भी किया। डॉ.तिवारी को श्रद्धांजलि देने के लिए बड़ी संख्या में प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षक, साहित्यकार एवं विधिवेत्ता मौजूद थे। यज्ञ में यजमान के रूप में डॉ.तिवारी की तीनों बेटियों ने भूमिका निभाई। डॉ.मालविका रंजन वाराणसी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं, गीतिका रंजन केन्द्रीय विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं तथा ईलिका रंजन लखनऊ के एक प्रतिष्ठान में कार्यरत हैं। डॉ.शशिरंजन तिवारी अपनी तीन सुयोग्य पुत्रियों के अलावा पुत्रियों की माँ डॉ.मनोरमा तिवारी को छोड़ गये हैं।

शोक विह्वल मनोरमा जी कुछ कहने की स्थिति में नहीं थीं किन्तु इस अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ.उदयप्रताप सिंह, श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव एडवोकेट, डॉ.नीतेन्द्र प्रकाश(गोंडा), श्रीमती कमलेश पाल तथा पर्यावरणविद् श्री पाल प्रवीण ने अपने हृदयस्पर्शी शोकोद्गार व्यक्त किये। लखनऊ विश्वविद्यालय की प्रोफेसर डॉ.मुक्ता छाबड़ा ने कहा- तिवारी जी अनुपम मानवीय गुणों से परिपूर्ण, जनप्रिय, विषय विशेषज्ञ, देवतुल्य महापुरुष थे। उनके गुणों का वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

खेद प्रकाश

वर्तमान काल में आर्य समाज आदर्श नगर, आलमबाग, लखनऊ के प्रधान श्री सतीश चन्द्र बिसारिया हैं और मंत्री श्री रुद्रस्वरूप जी हैं। गत मास आयोजित हुए वेद प्रचार सप्ताह के सभी कार्यक्रम श्री बिसारिया जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए तथा सभी कार्यक्रमों का विधिवत् संचालन और संयोजन श्री रुद्रस्वरूप जी ने किया। आर्य लोक वार्ता के अक्टूबर १८ अंक में आर्य समाज आदर्श नगर शीर्षक से प्रकाशित समाचार में कई त्रुटियाँ हुईं; जिनका मुझे खेद है। भविष्य में अपेक्षित सतर्कता बरतने हेतु मैं वचनबद्ध हूँ। अच्छा हो, आर्य समाजें अपना समाचार पहले की भांति लिखित रूप में डाक से मेरे पास भेज दिया करें, ताकि अशुद्धियों से बचा जा सके। -सम्पादक

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन समाचार

पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ की परम्परा आर्य समाज की देन है

केन्द्रीय गृहमंत्री ने आर्य समाज की नीतियों और सिद्धान्तों की भूरि भूरि प्रशंसा की

रोहिणी, नई दिल्ली में २५ से २८ अक्टूबर तक चलने वाले अभूतपूर्व अनुशासित, मर्यादित, शालीन, सांस्कृतिक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सराहना करते हुए केन्द्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने देश और समाज के लिए स्वामी दयानन्द सरस्वती के योगदान की सराहना की। उन्होंने कहा कि स्वामी जी द्वारा स्थापित आर्य समाज लड़कियों की शिक्षा और स्वच्छ पर्यावरण को बढ़ावा देने की दिशा में अथक प्रयास कर रहा है। इसका कार्य अनुकरणीय है।

राजनाथ सिंह रविवार को मुख्य अतिथि के रूप में आर्य समाज के चार दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उनका कहना था, 'भारत की ताकत भारतीयता है। यह सांस्कृतिक एकता में निहित है। जितनी अधिक एकजुटता होगी, भारत उतना ही शक्तिशाली होगा।' उन्होंने कहा, 'भारत न केवल देश बल्कि पूरे विश्व और मानवता के कल्याण के लिए ताकतवर होना चाहता है। भारत एक ऐसा देश है, जिसने पूरी दुनिया को वसुधैव कुटुम्बकम् (पूरा विश्व एक परिवार है) की अवधारणा दी। प्राचीन भारत में ऋषि मुनियों ने मानवता का संदेश फैलाया। उन्होंने संस्कृति का प्रसार न केवल देश बल्कि पूरी दुनिया में किया।' गृहमंत्री ने देश की मौजूदा समस्याओं के समाधान के लिए आर्य समाज द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

श्री सिंह ने आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि इस संगठन का भारतीय समाज में काफी योगदान है, क्योंकि यह लोगों की भलाई के लिए अथक कार्य करता आ रहा है। उनका कहना था कि आज प्रदूषण एक वैश्विक समस्या बन गई है और दुनिया इसका मुकाबला करने के लिए कदम उठा रही है। स्वामी दयानंद सरस्वती ने इस मुद्दे को पहचाना और पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ करने की परंपरा शुरू की। पेड़ नहीं काटने, बालिकाओं को शिक्षित करने और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने जैसी शिक्षाएं पहले से ही भारतीय संस्कृति में हैं। स्वामी दयानंद यह संदेश दुनिया को देना चाहते थे। यही वजह है उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने कहा दुनिया के पास अब भी वह ज्ञान नहीं है, जो हमारे वेदों में मौजूद है।

'महर्षि दयानंद-व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर संगोष्ठी

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता श्री आनन्द कुमार आर्य (पूर्व कार्यकारी प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा) ने की।

आर्य समाज लखनऊ की दमदार उपस्थिति

स्व.रेवती रमण रस्तोगी एडवोकेट जैसे प्रभावशाली नेतृत्व के अभाव में भी लखनऊ की आर्य समाजों ने अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में अपनी दमदार उपस्थिति से लखनऊ का गौरव बढ़ाया।

सर्वश्री पाल प्रवीण, आनन्द चौधरी एडवोकेट, सर्वमित्र शास्त्री, आचार्य विश्वव्रत, नवीन कुमार सहगल, रुद्रस्वरूप, श्रीमती शृंखला, श्रीमती नीलम सक्सेना, सतीश निझावन, डोरीलाल आर्य, श्रीमती कान्ति कुमार, आचार्य डॉ.रूपचन्द्र दीपक, डॉ. सत्यकाम आर्य, सोमव्रत शास्त्री, राजीव बत्रा, निरंजन सिंह, काशी प्रसाद शास्त्री, महेन्द्रदेव पाण्डे, शिवशंकर लाल वैश्य, श्रीमती कुमुदिनी वैश्य, अमन, उत्कर्ष, विमल किशोर आर्य कुल मिलाकर शताधिक आर्य प्रतिनिधियों ने महासम्मेलन में भाग लेकर लखनऊ को गौरवान्वित किया। भाग लेने वाले लखनऊ के आर्यजनों की नामावली अभी पूर्ण नहीं है। प्रकाशित सूची के अलावा जो आर्यजन महासम्मेलन गये हों कृपया हमें अपने नामों से अवगत करा दें ताकि हम प्रतिभागियों के अभिनन्दन कार्यक्रम में उन्हें आमंत्रित कर सकें। चाहें तो अपने नामों की जानकारी श्री पाल प्रवीण को दे सकते हैं।

आर्य लोक वार्ता की मौजूदगी

श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट के माध्यम से 'आर्य लोक वार्ता' की सद्यः प्रकाशित प्रतियाँ महासम्मेलन में पहुँचीं तथा कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य द्वारा गण्यमान आर्य प्रतिनिधियों में वितरित की गईं। 'आर्य लोक वार्ता' के इस सामयिक प्रकाशन को जिसने भी देखा; सराहना किये बिना नहीं रह सका।

आर्य समाज चन्द्रनगर का वार्षिकोत्सव

पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आर्य समाज चन्द्र नगर, आलमबाग, लखनऊ का वार्षिक उत्सव दिनांक ०७.११.१८ दीपवली के दिन को मनाया गया। वैदिक विद्वान् श्री नरेन्द्र शास्त्री एवं स्वामी योगानंद के वेदोपदेश हुए तथा श्री राजेन्द्र आर्य कानपुर के भजनों का कार्यक्रम हुआ। विद्वानों ने महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों की प्रासंगिकता पर सविस्तार प्रकाश डाला। प्रातः ७ से १२ बजे तक कार्यक्रम अबाध गति से चलता रहा। तत्पश्चात् ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) में सभी ने भाग लिया। इस अवसर पर क्षेत्रीय जनता के अलावा नगर के अन्य भागों से भी आर्यजनों ने भाग लिया। श्री अरुण विरमानी ने कार्यक्रमों की अध्यक्षता की तथा संचालन श्री विद्यासागर बग्गा ने किया। *(सं.सू.-रणसिंह)*

बाल दिवस

दिनांक १४ नवम्बर २०१८ को सायं ४ बजे से ७ बजे तक अलीगंज सेक्टर डी के पार्क में बाल दिवस के उपलक्ष्य में एक कार्यक्रम श्री अमरेश तिवारी (सुपुत्र स्व.पन्नालाल तिवारी) के प्रयासों से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आसपास की झुग्गी झोपड़ियों में रह रहे ५ से १४ वर्ष तक के बच्चों में जूडो कराटे, लम्बी दोड़ आदि प्रतियोगिताएं करा कर उपहार एवं प्रमाण पत्र दिये गये। *(पाल प्रवीण)*

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पेकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनय'
9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, पिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।

ग्राम ग्राम में नगर नगर में, 'आर्य्य लोक वार्ता घर-घर में